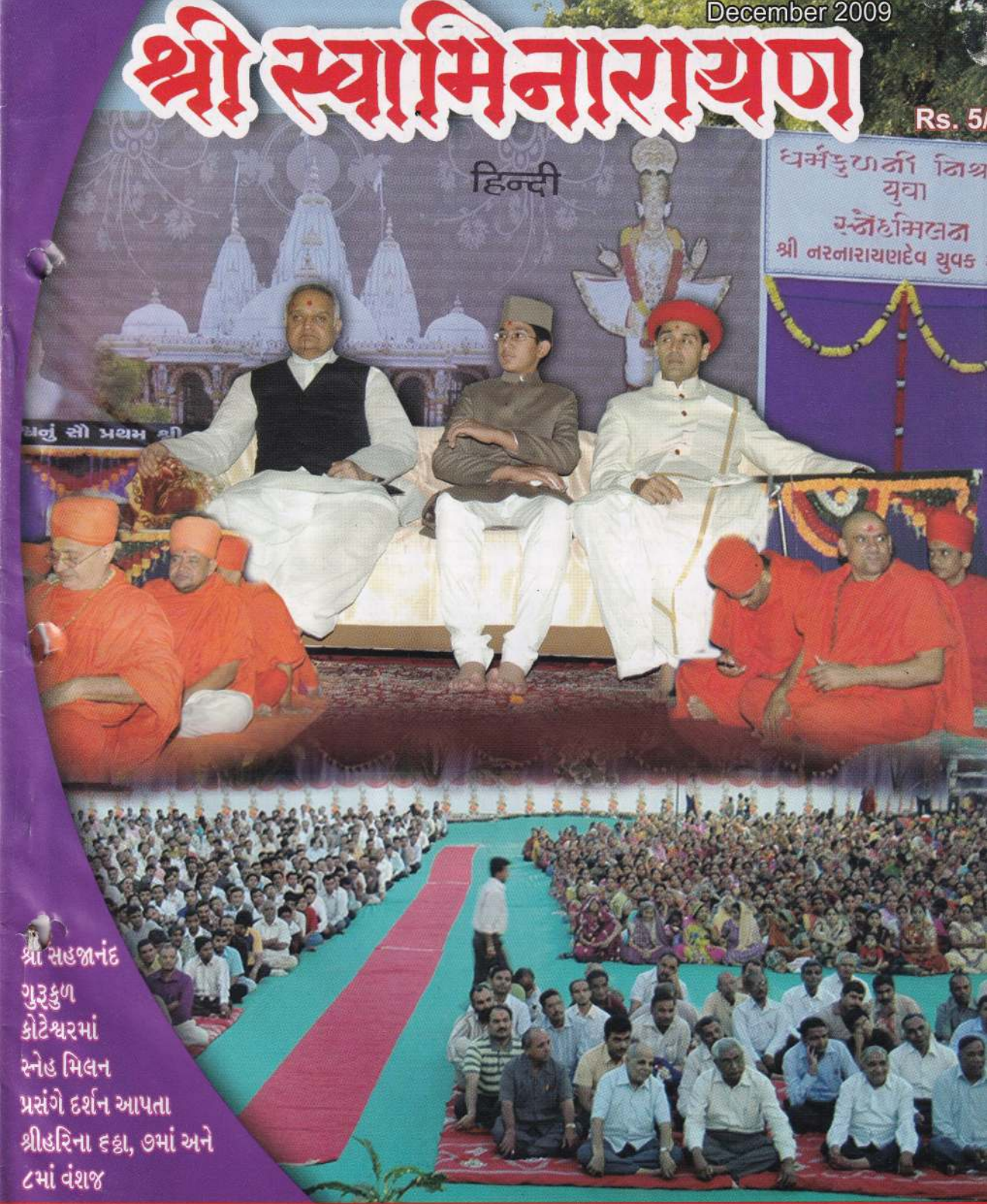
December 2009

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/



શ્રી સહજાનંદ
ગુરૂકુળ
કોટેશ્વરમાં
સ્નેહ મિલન
પ્રસંગે દર્શન આપતા
શ્રીહરિના દ્દદ્દા, ૭માં અને
૮માં વંશજ

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ ● Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

ઉત્તરાયણ પુણ્ય પર્વ પ્રસંગે દાન પુણ્ય

ભારત વર્ષના પુણ્ય પર્વોમાં ઉત્તરાયણનો મહિમા અનેરો અને અલૌકિક છે.મકર રાશીમાં સૂર્ય પ્રવેશનો સંક્રાંતિકાળ એ શુભનું મંગળકારી આગમન, સર્વથા દાન પુણ્યમાં અનેક ઘણો ઉમેરો કરતો હોવાથી આ સમયે પુણ્ય સ્થાનકમાં દાન કરવાથી આલોક અને પરલોક સંબંધી સર્વ મનોરથો તત્કાલ ફળે છે.

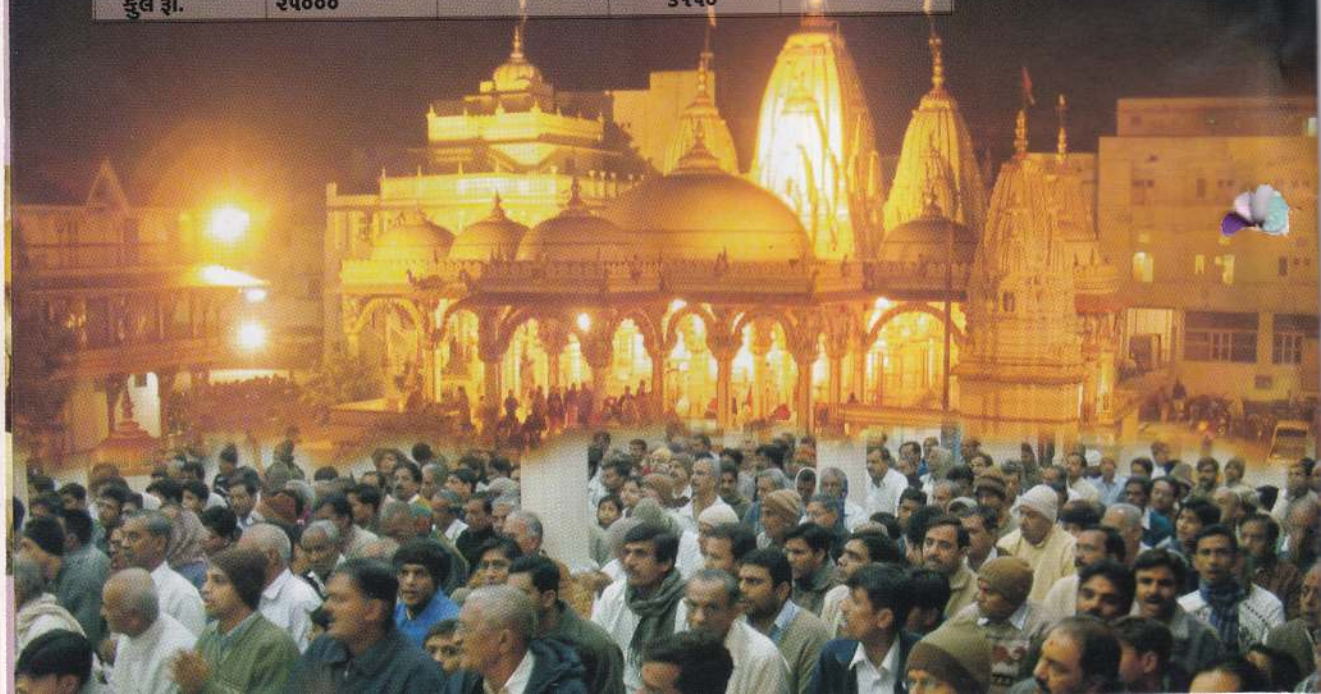
તો આવા સર્વોપરિ શ્રી નરનારાયણદેવના અલૌકિક સાનિધ્યમાં તથા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા પરમ પૂજ્ય મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય લાલજી મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં અને પૂજ્ય બ્રહ્મનિષ્ઠ સંતોની શુભ ઉપસ્થિતિમાં તા. ૧૪-૧-૨૦૧૦ના રોજ પુણ્ય પર્વ હોવાથી દરરોજ પ્રભાતે થતી ધનુર્માસની ધૂન્ય કથાની દિવ્ય સભામાં પધારી ઠાકોરજીની આ સેવાનો અતિ શુભ પ્રસંગે ઉમંગભેર વધાવી સેવામાં સહભાગી થઈ ધન્યભાગી બનીએ.

નોંધ : અમદાવાદ શહેરના દરેક સભ્યોને કાર્ડ પોસ્ટ દ્વારા પણ મોકલવામાં આવશે.
દેશ-વિદેશના હરિભક્તોને પણ ઉતરાયણ નિમિત્તે સેવા મોકલવા ખાસ ભલામણ છે.

મહંત સ્વામી
શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી

વિગત	ભાવ રૂા.	વજન	૫ કિલોના ભાવ રૂા.	આપની સેવા રૂા.
ચોખા	૨૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૨૫	
ઘઉં	૧૩૦૦	૧૦૦ કિલો	૭૫	
મગ	૪૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૨૦૦	
તલ	૧૨૦૦	૨૦ કિલો	૩૦૦	
ચણા દાળ	૩૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૭૫	
તુવેર દાળ	૮૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૪૦૦	
મોગર દાળ	૫૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૨૫૦	
શુદ્ધ ઘી	૩૦૦૦	૧ ડબો	૧૦૦૦	
તેલ	૧૦૦૦	૧ ડબો	૩૫૦	
ગોળ	૨૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૦૦	
ખાંડ	૩૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૭૫	
મંદિર જીર્ણોદ્ધાર				
કુલ રૂા.	૨૫૦૦૦		૩૧૫૦	

દાન, વસ્તુ રૂપે, રોકડ સ્વરૂપે તથા ચેક અથવા ડ્રાફ્ટ "શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર અમદાવાદ"ના નામે આપશો.
સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ
ફોન : ૨૨૧૩૨૧૭૦.





श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 अंक : 32 डिसेम्बर-2009

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कुमकुम रुपरेखा	३
३.	आत्मविश्वास के साथ दृढता	४
४	उपासनो	५
५	विद्याव्यसनी, सर्वकला कुशल आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी की आध्यात्मिक चमत्कारों का एक दर्शन	६
६	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन वहेलाल गाँव	७
७	दान-पुण्य-सुरवी होने का मुरव्य मार्ग	८
८	आनंद की लहर	११
९	सत्संग सुरभि	१२
१०	सत्संग बालवाटिका	१४
११	भक्ति सुधा	१६
१२	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

संसारी जीव कोई कार्यारंभ करे चाहे वह व्यवहारिक कार्य हो या आर्थिक हो, किसी विद्वान पंडित से उत्तम मुहूर्त दिखाकर ही कार्यारंभ करता है। इतना ही नहीं कुकर्म करनेवाला चोर भी मुहूर्त देखकर चोरी करने जाता है। कभी ऐसा भी होता है जितना पुरुषार्थ करते हैं उतना फल नहीं मिलता है। उस समय उसके मुंह से ऐसा शब्द निलकता है कि किस मुहूर्त में यह कार्य किये कि विघ्न ही विघ्न आ रहा है। उस समय यह विचार आता है कि उत्तम में उत्तम मुहूर्त कौन है ? सत्संग में विचरण करते समय श्रीजी महाराज से सभी भक्तों ने एकत्रित होकर कहा कि महाराज ? हमारे गाँव में कोई ब्राह्मण नहीं, इस लिये मुहुर्त दिखाने के लिये काफी तकलीफ होती है। इस विषय में आप कुछ रास्ता कीजिये। श्रीहरिने कहा, आप सभी को कोई मुहूर्त दिखाने की जरुरत नहीं है। कोई भी कार्य करना होतो हमारा "स्वामिनारायण" नाम उच्चारण करके कार्यारंभ करोगे तो कोई भी विघ्न नहीं आयेगा, वही श्रेष्ठ मुहूर्त होगा।

ता. १६-१२-०९ से १४-१-०९ तक का समय कुमुहुर्त का समय कहा जाता है। संसारी जीव इस समय कोई विवाहादि शुभ कार्य नहीं करते, लेकिन भक्तों के लिये यह समय "धनुर्मास" तो उत्तम मास है। परमात्मा इस महीने में ज्ञान प्राप्त करने जाते है और भक्त भगवान की भक्ति करने का प्रयास करते हैं। जगत के लिये यह कुमुहूर्त होगा लेकिन भगवान के भक्तों के लिये ऐसा कोई कुमुहूर्त नहीं है।

"सजनी आरे चोघडीयुं अमृत लाभनुं
फरी नहीं मले एवु वीजना झबकारा जेवुं मोती परोवी लेवी सत्संग कीजिये"

नित्य प्रातः जाग कर सत्वगुण होकर प्रभु के नाम का स्मरण करने के लिये जब बैठते हैं तो ऐसा लगता है कि अक्षरधाम की दिव्य अनुभूति हो रही है। इस उत्तम समय में यदि हम विशेष रुप से भगवत् स्मरण करके भक्ति का पाथेय बांधेंगे तो प्रभु अवश्य प्रसन्न होगे, बस सभी लोग ऐसा ही करे, सभी से ऐसी अभ्यर्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२००९)



१. हिंमतनगर गाँव में श्री कनुभाई सी. मोदी के यहाँ विष्णुयाग में पदार्पण।
२. विरमगाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
४. सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
४. से ९. बेंगकोक (थाईलेन्ड) सत्संग प्रचारार्थे पदार्पण।
११. कपडवंज श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१२. श्री बाबूभाई जीवरामभाई के यहाँ पदार्पण - बापूनगर।
श्री सुरेशभाई सोजीत्रा के यहाँ पदार्पण - मणीनगर।
१३. श्री रामचंद्र पोपटलाल सोनी के यहाँ पदार्पण - बोपल।
१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर बलवंतराय होल में पदार्पण।
१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२ पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
१९. जूना राबडीया (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर के खातपूजन प्रसंग पर पदार्पण।
२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-३ पदार्पण।
२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२ पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर आंत्रोली (ता. कपडवंज) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण साथ में पू. लालजी महाराजश्री पधारे।
२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
प.पू. लालजी महाराजश्री वडु गांव में पारायण प्रसंग पर पधारे।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु (त. कडी) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२५. जमीयतपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२६. देवीपुर (त. हलवद मूलीदेश) गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२७. जेतपुर (मच्छ) मूली देश श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, वहीं से माधापर (कच्छ) पदार्पण।
२९. श्री आदित्य एस. व्यास के यहाँ पदार्पण जीवराजपार्क।
सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर मे पू. लालजी महाराजश्री सत्संग शिबिर में पधारे।
३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राज.) पदार्पण।

आत्मविश्वास के साथ दृढता

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु
महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

मनुष्य की जिन्दगी के एक वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। यह जिन्दगी के वर्षो में एक एक दिन कटते जाते हैं। कोई दिन अच्छा निकल जाता है तो कोई खराब। यद्यपि सभी दिन एक समान ही होते हैं। चाहे वह पूनम हो या अमावास्या हो इतना अवश्य है कि पूनम की रात प्रकाश फैलाती है और अमावस की रात अंधकार फैलाती है।

मनुष्य के जिन्दगी रुपी पन्ने में बहुत सारी घटनायें लिखी रहती हैं। कितनी वार तो ऐसा होता है कि जीवन की घटना में अनावश्यक परिणाम का भी बीज रहता है। कभी अनावश्यक घटना में अनुकूल परिणाम रहता है। जो भी हो जिसके जीवन में जो लिखा है वह निश्चित ही रहता है। किसी की जिन्दगी का पूर्वाभास तो अवश्य होता है लेकिन स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। इसलिये तो कहा जाता है कल किसने देखा है। हरि की भजन करना हो तो कल की प्रतिक्षा के विना सद्यः प्रारंभ कर देना चाहिये। जिंदगी को रसमय बनाने की रोमांचक प्रेरणा अन्तःकरण से मिलती है। भगवान कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र है। प्रतिद्वन्द्वी जब मान मर्यादा का त्याग करता है तब प्रभु चक्र का प्रयोग करते हैं।

प्रत्येक मनुष्य में आत्मबल होता है। उसके ऊपर परमात्मा की छत्र छाया रहती है।

कोई ईश्वर को मानता है कोई नहीं मानता। जो सत्य का आश्रय रखते हैं उनकी सदा विजय होती है। व्यासजी ने सत्य को परमात्मा का रुप बताया है। सत्य स्वरुप परमात्मा जहाँ रहते हैं वहा विजय अवश्य होती है।

"सत्यमेव जयते" इस उक्ति की चरितार्थता जिसमें हैं वही सत्यनिष्ठ है। आसुरी शक्तियों की शक्ति भी इसी सत्य में निहित है। इसलिये तो आसुरी शक्तियों को जीतने के लिये सदा सत्य का सहारा लेकर देवता कोटी के लोग सदा विजय प्राप्त करते रहे हैं। अशुभ पर शुभ की विजय होती है।

मनुष्य को कल्पना के अतीत में जाने की जरुरत नहीं, वह वर्तमान के पथपर चलता रहे उसीमें उसकी विजय है। सदा परमात्मा में मन को एकाग्र करके अपनी दैनिक वृत्ति को करे तो निश्चित उसकी सदा विजय होती रहेगी। जिस तरह अर्जुन भगवान में अपनी वागडोर समर्पित करदी तो भगवानने उसे इहलौकिक तथा पारलौकिक दोनो प्रकार की विजय प्राप्त करादी। झवेरचंद मेघाड़ी ने लिखा है कि जिन्दगी में हंसते रहना चाहिये। वे बहुत लंबे समय तक जीवित तो नहीं रहे लेकिन जितना वे देकर गये उससे वे अमर हो गये। इसी तरह स्वामी विवेकानंद भी स्वल्प काल में धरा छोड़कर चले गये लेकिन अमर कीर्ति करके गये हैं।

सभी के जीवन में सुख दुःख तो आता है। लेकिन घबड़ाना नहीं चाहिये। आदमी को प्रयास सदा करते रहना चाहिये। कभी तो सफलता मिलेगी कितने लोग मैदान में जाकर वापस आजाते हैं यद्यपि उन्हें यह पता नहीं कि उसी जगह में सफलता मिलने वाली है। "निरन्तर गति शीलस्य" सफलता तो होती है चक्रव्यूह में अभिमन्यु अवश्य मारा गया लेकिन उसके पीछे अर्जुन के मन में संकल्प दृढ हुआ और विजय ने उनकी शरणागति स्वीकार ली। भगवान श्रीकृष्ण रणछोड़ दिये, वह कायरता नही थी, वह भी एक व्यूह है।

कितने लोग थोड़ी आपत्ति में भी अपने को हारमान लेते हैं। जिस तरह सैनिक युद्ध में शहीद हो जाते हैं लेकिन हार नहीं मानते। इसी तरह हमें भी अपने हरकार्य में सफलता मिले या न मिले लेकिन अपने प्रभु पर विश्वास रखना चाहिये। आत्म विश्वास में सफलता निहित है। आशा में अंकुर निकलेगा और प्रभु तक पहुंचने का मार्ग खुल जायेगा। इसलिये व्यक्तिको आत्मनिष्ठ होना चाहिये एक निष्ठ होकर भक्ति में लीन हो जाना चाहिये।

प्रतिदिन सूर्य अपने प्रकाश को फैलाकर अन्धकार को नष्ट करता है। सूर्य मनुष्य की अन्तरात्मा है। मनुष्य की आत्मश्रद्धा ही प्रकाश हैं। वही उसकी विजय है। वही उसका बल है।

उंपासना

- साधु घनश्यामप्रकाशदास, जमीयतपुरा (महंत माणसा)

(वचनामृत ग.म. ९ अधारित)

अक्षरधाम के अधिपति भगवान श्री स्वामिनारायण अति करुणा करके इस पृथ्वी पर पधारे थे । देवाधिदेव का रुप त्याग कर मनुष्य रुप धारण किये थे । मनुष्य भाव रखकर सभी में सखा का भाव रखे जिससे श्रावणी (रक्षाबंधन) के दिन सभी से रक्षा बंधन बंधवाकर कहते हैं कि मुक्त, जीवप्राणी मात्र जो भी है वे सभी कोई न कोई आधार लेकर जीवन यापन करते हैं । कितने लोग शरीर को नाना प्रकार के अध्यवसाय द्वारा स्वस्थ रखते हैं । आधुनिक युग में बहुत सारी व्यवस्थायें बनाकर लोग सतर्क रहते हैं । झाड़ा उल्टी को एक गोली से रोक सकते हैं । आज के वैज्ञानिक युग में लोग चंद्र तथा मंगल तक पहुंच रहे हैं । मेडिकल संशोधन द्वारा शरीर के अवयवों का प्रत्यारोपण किया जा रहा है । बहुत सारी अद्यतन सामग्रियों द्वारा अनेक सुविधा करके शल्यचिकित्सा की जाती है तो भी दु:ख तो बना ही रहता है । कारण यह कि सुख दु:ख का मूल देह नहीं है, मन है । मन कमजोर होने पर ही लोग रोग, शोक, दु:ख से आक्रांत रहते हैं । इसलिये मन को मजबूत रखना चाहिये । इसलिये मनोचिकित्सक तथा अन्य लोग अपने उपचार द्वारा खूब फले-फुले हैं । इसके सिवाय कितने लोग तपोबल से इन्द्रियनिग्रह करके मन की शांति में सभी सुख प्राप्त कर लेते हैं । लेकिन यह शाश्वत नहीं है । आत्मबल से अखंड आनंद रुप निजस्वरुप में मन को स्थिर करके भगवान के स्वरुप को पहचानने का आत्मबल मिलने लगता है । इसलिये सभी प्रकार के बल की अपेक्षा आत्मबल श्रेष्ठ है । उस आत्मबल की अपेक्षा सम्पूर्ण सुख के दाता का बल



सर्वोत्तम तथा सर्वोत्कृष्ट है । इसलिये सभी प्रकार के आधार का त्याग करके मात्र अनन्य भाव से भगवान की शरणागति में सुख एवं शांति है । सुख का झरना निरंतर हृदय में बहता रहता है । यह इस तरह का समुद्र है जिसमें सदा तरंग उठती रहती है, भरती आती रहती है । कभी कभी नहीं होती । इसी तरह हे भक्तों ! भगवान के भक्तों में जब प्रभु का बल होता है तब लेशमात्र भय नहीं होता है । जन्म, मरण, गर्भवास इत्यादि का दु:ख समाप्त हो जाता है । लोकेषणा, पुत्रेषणा, वित्तेषणा इत्यादि का भाव धीरे-धीरे समाप्त होजाता है । किसी प्रकार के उद्वेग को मात्र भगवान के बल द्वारा ही पार किया जा सकता है । इसलिये संसार की असारता सहजानंद स्वामी के स्वरुप का निरन्तर ध्यान करना चाहिये । उन्हीं का एकमात्र बल ही बल है । महाराज ने कहा है कि प्रभु में एकमात्र निष्ठा रखकर निदिध्यासन करके प्रभु परायण रहने में ही इस संसार में आकर मनुष्य शरीर प्राप्त करने में रहस्य है । दिन-प्रतिदिन नया नया भाव प्रभु में प्रगट करने से अन्तर की आत्मा निर्मल होगी । ऐसी अभिलाषा सभी के हृदय में बढती रहे ऐसा आशीर्वाद देते हैं ।



विद्याव्यसनी, सर्वकला कुशल आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी की आध्यात्मिक चमत्कारों का एक दर्शन

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

अति शांत, सौम्य तथा तेजस्वी दीर्धद्रष्टा पू. आचार्य प्रवर श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज के दिव्य वात्सल्यादि गुण तथा अद्‌भुत ओजस्विता के अनेक प्रसंग अक्टूबर-नवम्बर इ.स. १९६९ में प्रगट हुये थे। "प.पू.ध.धु. अ.नि. महाराजश्री १००८ देवेन्द्रप्रसादजी स्मृति अंक" में अनेक शुभ प्रसंगो की तस्वीर एकत्रित की गयी है। प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीने मेरे ऊपर कृपा करके जो अंक ४० वर्ष पूर्व प्रकाशित था उसे मेरे पास भेंज दिया। इसके लिये मैं आजीवन पू. महाराजश्री का ऋणी रहूँगा। उस अंकमें असंख्य विद्वानों द्वारा पू. महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी के विषय में अमाप चमत्कृतियों का दर्शन होता है।

वे सत्संगियो के लिये तथा संतो एवं हरिभक्तों के लिये अनेक सुविधा से युक्त अहमदाबाद मंदिर में दो बड़ी-बड़ी धर्मशाला का निर्माण करवाया था। जिसमें श्री नरनारायण बिल्डींग श्री घनश्याम बिल्डिग, असारवा स्वामिनारायण बाग के पास तथा उस समय सचिवालय के पास बड़ी आलीशान बिल्डिग बनवाकर सभी को प्रसन्न कर दिया था।

वे जेतलपुर में सं. १९९३ फाल्गुन कृष्ण-८, ईडर में सं. २००२ ज्येष्ठ शुक्ल-११, छपैया में सं. २००७ ज्येष्ठ शुक्ल-११, मांडवी में सं. २०१५ फाल्गुन शुक्ल-२ तथा सिद्धपुर सं. २०२१ ज्येष्ठ शुक्ल-११ के दिन शिखरी मंदिरों में देवों का शत वार्षिक पाटोत्सव संपन्न करके भक्तों को भक्तिरस में डुबोदिया था। इसके अलांवा टोरडा, देत्रोज, अंजार, साबरकांठा, सापावाडा में देवों की वैदिक विधिसे प्रतिष्ठा करके सत्संग में उन-उन स्थान के अनुयायियों को देव दर्शन तथा देव सेवा की अनुकूलता प्रदान करदी थी।

श्रीहरि के जन्मस्थान छपैया में मंदिर का विशाल मुख्य दरवाजा तथा सभा मंडप, अहमदाबाद मंदिर में बोरिंग की व्यवस्था, नारायणघाट में शतकुंडी यज्ञ इत्यादि का निर्माण पू. महाराजश्री के मार्गदर्शन में हुआ था। पू. महाराजश्री के दर्शनार्थ पूर्व प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई तथा श्री गुलजारीलालनन्दा पधारे थे। पुरी के शंकराचार्य तथा वैष्णवाचार्य भी पधारे थे। भागवताचार्य श्री रामचन्द्र डोंगरेजी महाराजश्री दो चार बार पधारे थे।

लुणावाडा के श्रीरमणभाई भट्ट ने लिखा है कि "महाराजश्री वचन सिद्ध थे। मेरे कम्पाउन्डर की नौकरी पूरी होने वाली थी, उन्हीं दिनों मैं दर्शन के लिये आया और कहा कि मैं निवृत्त होकर आपकी सेवा में रहना चाहता हूँ।

आगे पेज २०५२

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन वहेलाल गाँव

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

भक्तराज जेसींगभाई यात्रिक भवन तथा व्रजेन्द्रप्रसाद द्वारा के उद्घाटन प्रसंगं पर महाराजश्रीने कहा कि - इन सभी प्रसादी के स्थलों का जब दर्शन करें तब श्रीहरि के एक लीला चरित्रों का स्मरण करते जांय, वह इसलिये कि यही स्मरण हृदय में सदा बना रहे तो अंत समय में वही स्मरण हो जाने पर प्रभु के सायुज्य की प्राप्ति होजायेगी । महाराज के स्मरण में ये स्थल बहुत उपकारक हैं । जीवन का पाथेय इसी में निहित है । वहेलाल के भक्त श्रीहरि की प्रसादी का महत्व समझकर इस स्थल का रक्षण करते हैं जिस में श्री अनिलभाई तथा उनके पिताजी जयंतीभाई यह कार्य बड़ी श्रद्धा से किये हैं।

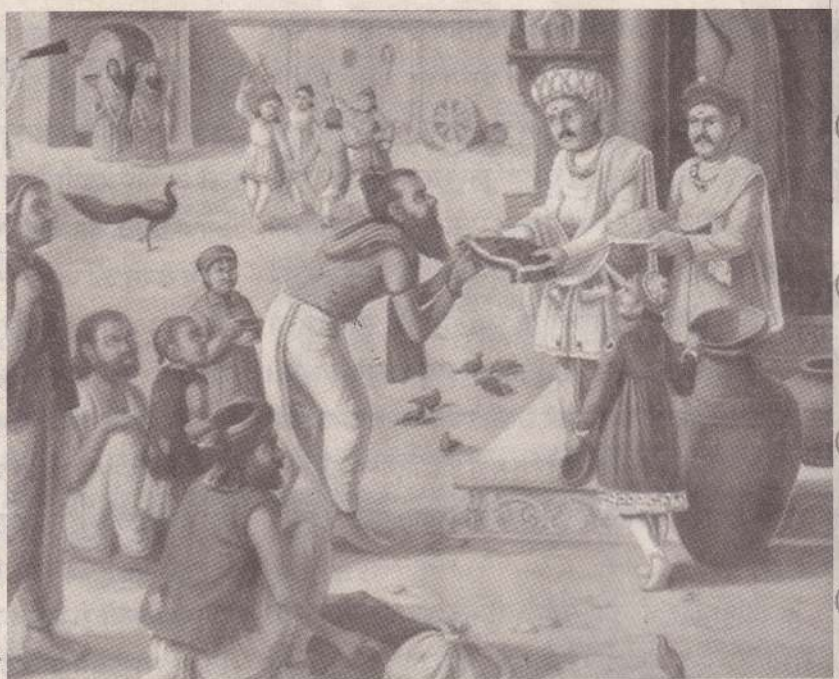
जीर्णोद्धार तो ईंट, रेती, सीमेन्ट इत्यादि से करना सरल है । एकवार जीर्णोद्धार हो जाय तो १५-२० वर्ष तक देखना नहीं पड़ता है । अर्थात् मकान-मंदिर का जीर्णोद्धार तो हो सकता है, परंतु अपने जीवन का जीर्णोद्धार करने में कही पीछे न रहजांय इसका सतत ध्यान रखना चाहिये । एक पुस्तक में पढे थे कि दक्षिण भारत में एक मंदिर हैं । सत्य हो या गलत उसमें लिखा था कि जब कल्कि भगवान अवतार लेंगे तो आपके मंदिर में पधारेंगे । परंतु आपके मंदिर का निरन्तर जीर्णोद्धार होना चाहिये । इसीलिये आज भी मंदिर का जीर्णोद्धार चालू है । इस कार्य पर थोडी हंसी आ रही है । परंतु विचार करें तो सीखने की बात यह है कि अपने जीवन का निरन्तर जीर्णोद्धार करते रहना चाहिये । देव के प्रति निष्ठा - भक्ति करनी चाहिये कितनी भक्ति किये, कितनी माला फेरे यह सब बढा घटा इसका निरंतर चिन्तन करते रहना चाहिये । प्रतिदिन नियम, पूजा, आरती, स्तुति, चेष्टा इत्यादि नियमित करना ही चाहिये । सत्संग-भक्ति को कभी छोड़नी नहीं चाहिये । यदि कभी मन में यह आजाय कि हम बहुत भजन-भक्ति, सत्संग किये अब आगे करने की जरुरत नहीं । तब भगवान भी ऐसा सोचें कि अब हमारा भी कार्य पूर्ण हो गया किसी भक्त का सहयोग नहीं करना है । लेकिन ऐसा नहीं भक्त की रखवाली तो श्रीहरि सदा करते रहते हैं । भगवान से हमारा अस्तित्व है । जो भी सुख है वह प्रभु का दिया हुआ है । महाराज हमे अन्न, वस्त्र, धन सबकुछ दिये हैं । हमें जो दुःख आता है वह हमारे स्वभाव प्रकृति का फल है ।

पूर्वजन्मों से आज तक हम एक दूसरे के किसी न किसी सम्बन्धमें जकड़े हुये हैं । पिता, माता, पुत्र, पति, पत्नी इत्यादि रुप से जकड़े हुये हैं । यदि जन्म से ही हम महाराज का होकर रहेंगे तो महाराज हमारे हो जायेंगे । संपूर्ण दिन हम जिसका चिंतन करते है, हम उसी के हो जाते हैं और वह हमारा हो जाता है । जिस तरह बड़ा व्यापारी पूरे दिन दुकान व्यापार-धंधा का चिंतन करता रहता है, उसी तरह हम भी महाराज का सतत चिंतन-स्मरण करते रहेगे तो महाराज के प्रति हमारी प्रेम भावना उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती रहेगी । वही अंत में काम आने वाला है ।

यजमान परिवार तथा सहयोगी अन्यजन सभी के मनोरथ महाराज पूर्ण करें ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना ।

दान-पुण्य-सुखी होने का मुख्य मार्ग

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)



इस संसार में बहुत सारे संप्रदाय है तथा बहुत सारे धर्म है। सभी धर्मों में अपने आप का दशवां या वीसवां हिस्सा दान करने का शास्त्रीय विधान है। इसी तरह से श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में भी १० वां या २० वां भाग दान करने का नियम है। जगत के मनुष्य ऐसा कहते हैं कि श्री स्वामिनारायण संप्रदाय वालों के पास बहुत पैसे हैं। जगत की यह वात एकदम सत्य है। कारण यह कि हरिभक्त श्रीहरि की आज्ञा में वर्तन करते हैं। भक्त, नारायण को अपने साथ रखते हैं। नारायण जब आयेंगे तो साथ लक्ष्मीजी तो आयेंगी ही। मंहगाई के इस जमाने में मनुष्य रात-दिन पुरुषार्थ करके द्रव्यार्जन में लगा रहता है। सभी को आर्थिक ढंग से सुखी रहना है। नीति से पैसा कमाना बहुत कठिन और श्रीहरि की आज्ञा में रहकर यदि कार्य किया जाय तो जीवन सुखी हो जायेगा। सुखी होने के बहुत सारे रास्ते हैं लेकिन उस में से नियम पूर्वक दान-पुण्य का सहारा लेकर तथा प्रभु की आज्ञा में रहकर अपने मार्ग पर चलेंगे तो इस जगत में सुख तो मिलेगा और अंत में अक्षरधाम की प्राप्ति होगी।

श्रीहरि अपने आश्रितों के कल्याणार्थ बड़े-बड़े मंदिर बनाये तथा उसमें अपने स्वरुप की प्रतिष्ठा करवाये। इसके साथ ही मंदिर के निर्वाहार्थ दान-पुण्य ती व्यवस्था किये। इस तरह जो दान करेगा वह देव का कहा जायेगा। श्रीहरि ने अपने अपर स्वरुप में धर्मवंशी आचार्य की परंपरा को संप्रदाय की गद्दी पर प्रतिष्ठित किया। उनके लिये भी लोग दान करें ऐसी आज्ञा की। श्रीहरि ने आचार्यजी को गृहस्थ जीवन जीने की आज्ञा दी। हम यह जानते हैं कि गृहस्थ को हर जगह पैसों की जरुरत पड़ती है। हम नौकरी-व्यापार करके द्रव्योपार्जन कर लेते हैं। परंतु आचार्यजी तो ऐसा नहीं कर सकते। कारण यह कि वे अपना जीवन सत्संग की सेवा में समर्पित कर दिये हैं। महाराजश्री के चरणों में जो भेंट-सौगात रखी जाती है वह श्री नरनारायणदेव अथवा श्री लक्ष्मीनारायणदेव की आफिस में जमा हो जाती है। आचार्य महाराजश्री गुरुमंत्र देकर हमारे जीवन को श्रीहरि

के साथ जोड़ देते हैं। यह गुरु ऋण हम कभी उतार सकते नहीं है। श्रीहरि के समय से यह परंपरा चली आ रही कि पूरे देश के मंदिरो में से संत जब वर्ष में एक बार दान लेने आवे तो दशांश या वीशांस अवश्य दान करें। दान तो वर्ष में एकवार किया जाता है। जो व्यक्ति नौकरी करते हों वे प्रति मास दशवां- वीसवां शुद्ध धन अवश्य अपने देश विभाग के अनुसार मंदिरों में दान करें। किसान या व्यापारी वर्ग वर्ष में एक वार अपने आय में से १० वां २० वाँ भाग अवश्य दान करें। तात्पर्य यह है कि अपने देव का द्रव्य घर में नहीं रखना चाहिये।

गृहस्थाश्रमी का यह धर्म है कि जो भी व्यवसाय करता हो उसमें से प्राप्त सम्पत्ति का दसवां भाग भगवान श्रीकृष्ण को अर्पण करे। इसके अलांवा जो व्यवसाय में कमजोर हो वे वीसावं भाग दान करें (शि.प. श्लो. १४७)

श्रीहरि की आज्ञानुसार जो ऐसा करेगा उसका जीवन सुखी होगा। स्वयं प्रभुने हम सभी को सुखी करने के लिये यह आज्ञा की है। जिस तरह राजा अपनी प्रजा को सुखी करने के लिये तथा प्रजा के अन्य जितने विकास के मार्ग हैं उन्हे विकसित करने के लिये प्रजा से कर लेता हैं ठीक उसी तरह श्रीजी महाराज उत्तर-दक्षिण देश विभाग के हिसाब से श्री नरनारायणदेव तथा लक्ष्मीनारायण देव को अर्पण करने की जो आज्ञा की है, आज भी वह प्रक्रिया चालू है। इससे मंदिर का सम्पूर्ण व्यवहार चलता है। तथा सत्संग के विकास में इस धन का उपयोग किया जाता हैं। मंदिर में प्रभु की प्रतिष्ठा मात्र से सभी कार्य पूर्ण नहीं हो जाता, इसके साथ अन्य खर्च होते हैं जिसके लिये दान-भेंट द्वारा प्राप्त धन से उसे पूर्ण किया जाता है। प.पू. आचार्य महाराजश्री की चरण भेंट भी देव की आफिस में जमा हो जाती है। इसकी रसीद फटजाती है और व्यवहार के कार्य में अर्थात् मंदिर तथा सत्संग के विकास में लिया जाता है। प.पू. आचार्य महाराजश्री के शब्दों में कहा जा सकता है कि देव को देना चाहिये, देव का लेना नहीं चाहिये। जब दूसरे के अधिकार की वस्तु नहीं पचती तो देव का अंश कैसे पच सकता है, इसलिये अपनी आवक का दसवाँ भाग अवश्य प्रभु को भेंट करना चाहिये।

देव के लिये निकाला गया दसवां भाग यह कोई दान नहीं है यह तो प्रभु का हिस्सा है, यह अपना कर्तव्य समझकर उनका भाग उन्हे अवश्य अर्पण कर देना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करते हैं तो चोर कहे जायेंगे। इसके अलांवा अन्यत्र कहीं भी दान शिक्षण में संत सेवा में, मंदिर निर्माण में, गौ सेवा में रोगी सेवा में किया जा सकता है। वह दान कहा जायेगा। देव को किया जाने वाला दशांश अर्पण आवश्यक है जब कि दान अपनी इच्छा पर है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो पंच पाप



लगेगा। जो ऐसा कहते हैं कि यह हरि का है उन्हे लगेगा। जो ऐसा कहते हैं कि यह हरि का है उन्हे क्या देना ? तो ऐसा कहने वाले कृतघ्नी कहे जायेगे।

श्रीहरि की इस आज्ञा से यह स्पष्ट होता है कि देश विभाग के अनुसार जिस देश मे जो रहते हैं वहाँ पर दशवां, वीशवां भाग अवश्य अर्पण करें। श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री सत्संग-संप्रदाय के रक्षक हैं इसलिये उनकी मौखिक या लिखित जहाँ पर भेंट या दान करने की आज्ञा हो वहीं पर दान-भेंट करना चाहिये। उदाहरण के रुप में मुख्य देव के देश विभाग अनुसार जहाँ भी मंदिर का निर्माण कार्य होता हो वहाँ के लोग दान करने

में असमर्थ हो तो, जिन लोगों को भगवान संपन्न किये हैं वे लोग अवश्य सहयोग करे।

श्रीहरि ने एकपत्र में लिखा है कि भक्तजन अपने अपने गाँव में संतो के रहने की व्यवस्था (धर्मशाला) उत्तम करवायेंगे। लेकिन मुख्य देव के दशवें भाग को मुख्य मंदिर में ही जमा करायेगें। उसमें से एक पैसा भी किसी अन्य कार्य में लगायेंगे नही। क्योंकि जिस देश विभाग में जो मुख्य मंदिर हो वहाँ के पीठाधिपति पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा मंदिर से सम्बन्धित सभी कार्य देखना पड़ता है। वे मंदिर या सत्संग के विकास हेतु यह धन उपयोग करते हैं। अतः श्रीहरि की आज्ञा में जो दान भेंट नही करता उसे वचन द्रोही कहा जायेगा।

स्वामिनारायण मासिक पत्रिका में दान-भेंट बार-बार इसलिये लिखना पड़ता है कि शिक्षापत्री के ११२ वें श्लोक अनुसार श्रीहरि की आज्ञाका पालन सत्संगी नही करते हैं। समय की धारा में सभी अपने-अपने मन के अनुसार यत्र-तत्र दान-भेंट कर देते हैं। अपनी दृढ निष्ठा तथा आत्म समर्पण की भावना होतो जगत के सभी व्यवहार अनित्य हैं यह सभी समझकर प्रभु की आज्ञा में अपना जीवन सुखी किया जा सकता है। श्रीहरि की आज्ञा का पालन करना श्रेयस्कर है लेकिन अपने मन के अनुकूल करना योग्य नहीं है।

अंत में इतना ही लिखना है कि श्रीजी महाराज के समय से जो परंपरा दान-भेंट की चली आ रही है उसे ध्यान रखकर सभी सत्संगी हरिभक्त अपने नाम की पक्की रसीद मुख्य मंदिर की आफिस से अवश्य प्राप्त करें। यही दान-भेंट अक्षरधाम का पाथेय बनेगा। अन्य सभी मिथ्या है, इसका सदैव ध्यान रखना चाहिये।

विद्याव्यसनी, सर्वकला कुशल आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी

पेज नं ६ से आगे

यह सुनकर महाराजश्री ने कहा अभी आपकी नौकरी आगे चलेगी, ऐसा ही हुआ, उनकी नौकरी आगे बढ गयी। भुज के भूतपूर्व महंत स्वामी धर्मजीवनदासजीने लिखा है कि पू. महाराजश्री छ बार कच्छ पधारे। सं. १९९८ की साल में श्री घनश्याममहाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा उन्हीं के हाथों हुई थी। कच्छ के महाराज श्री विजयराजजीने पू. महाराजश्री को दरबार में पदार्पण करवाकर एक घंटे तक सत्संग किया। सं. २००४ में काछीया गाँव के हरिभक्तों के आग्रह पर सभी के घर पदार्पण किये थे। उसी समय वरसात होने लगी फिर भी पदार्पण करते रहे। एक हरिभक्त का घर बंद था, वह मंदिर में सेवा के लिये गया था। दरवाजा में केवल सीकड़ लगी थी, स्वयं उसे खोलकर भीतर जाकर पदार्पण किये और उस घर को पावन किये थे। वे कहते थे कि धन की सेवा की अपेक्षा तन की सेवा श्रेष्ठ है।"

उनकी तबियत अच्छी नहीं रहती थी इसी लिये वे यदा कदा माउन्ट आबू में रहते थे। सं. २००५ में एकाएक तबियत बिगड़ते ही आश्विन शुक्ल-१ ता. १२-१०-१९६९ को समस्त सत्संग को रोते छोड़कर अक्षरधाम पधारे थे। उस समय उनकी अवस्था ४७ वर्ष की थी। ३२ वर्ष तक इस पद पर प्रतिष्ठित रहे। जीवन के अन्तिम दिन तक कार्यरत थे। प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी शोकसभा में वर्णन किये बाबूजी ने हमसे कहा था कि संत चाहे कितने भी छोटे हों उन्हें मान के साथ बुलाना तू कहकर नहीं बुलाना। सभी के प्रति सद्भाव रखना। श्रीहरिने अपने कुल को आचार्य पद दिया है उसकी शोभा बनाये रखना। अभिमान नहीं करना। माता, पिता, संत, भक्तों के आत्मचिन्तन, अक्षरधाम में श्रीहरि के साथ दिव्य देह से रहने वाले पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटि वन्दन।

आनंद की लहर

एक कुंवारा का कीर्तन

- स्वामी हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर स्वा. मंदिर)

अहमदाबाद के नवावास में संत-हरिभक्तों की सभा में श्रीहरि विराजमान थे । महाराज को जितना कथा में प्रेम था उतना ही कीर्तन में प्रेम था । उसमें श्री ब्रह्मानंद स्वामी या प्रेमानंद स्वामी का कीर्तन होता तो वे सुधबुधभूल जाते थे ।

नवावास की इस सभा में महाराज ने ब्रह्मानंद स्वामी को कहा कि स्वामी ! आप कोई अच्छा कीर्तन सुनाइये तो। स्वामीने कहा महाराज । उलाहना भरगीत हो ऐसा सुनाऊ ? महाराज ने हाँ कह दिया । अब तो स्वामी कीर्तन सुनाने लगे -

नानकडो जानी रे, के झाँझु कहेती नथी,
कहे तो लक्षत तारा रे, के दाखाडुं सर्व कथी । १
नानो सो दीसे रे, के जरा नव लाजतो,
गोवाडाना संगे रे, के आवे गाजतो । २
नंदने जशोदा रे, के गोरा गात्र वडे,
तूं कालो केम छो रे, के सौने भरम पड़े । ३
तारा मात पिता तो रे, के भोला बेऊ जणा,
तुंज मा दीसे छे रे, के घातलडी ने फेल घणां । ४
मां बांप मां ये कोई ने रे, के स्वभाव नथी एवो,
आवो अलबीलो रे, के थयो तूं को जेवो । ५
ब्रह्मानंद ना बहारा रे, के पालव मेल मारो,
लखणां नो पुरो रे, के त्यारे हजु कुंवारो । ६

इस कीर्तन में स्वामीने कटाक्ष किया है । सखा भाव वाले भक्तों को आनंद की अनुभूति होगी । ब्रह्म मूर्ति अपने कीर्तन में कहते हैं कि कन्हैया श्रीहरि की तरफ हाथ बढाकर कहते हैं कि हे कृष्ण तुहें देखकर मन में एक शंका होती है । कारण यह कि तुम्हारे मां-बाप नंद-जशोदा गोरे हैं । लेकिन तुम काले हो । तूं काला क्यों हुआ ? इसलिये हमारे मन में शंका होती है ।

दूसरी तरफ तुम्हारे मां-बाप बड़े सीधे हैं । जब कि तूं विचित्र प्रकृति का है । तुम्हारे भीतर छल-कपट भरा हुआ है । तूं किसी के चित्त को चुरा लेता है । तूं किसी को भी लड़ा देता है । यह सभी विचित्र आदत तुम्हारे मां-बाप में नही है । तुम्हारे मां-बाप धर्म-भक्ति वाले हैं । तू ऐसी विचित्र प्रकृतिवाले कैसे हो ? हमें इसी में शंका होती है कि कुछ गड़बड़ जरुर है ।

स्वामीने अन्तिम पद में कमालकर दिया है । श्रीकृष्ण नंद-जशोदा के साथ मिल गये होंगे । लेकिन ऐसा नही उनका लक्ष्य महाराज की तरफ है । वे कीर्तन के माध्यम से केवल महाराज को नही बल्कि सम्पूर्ण सभा को हंसा दिये ।

श्रीहरि भी हंसने लगे । स्वामी अंत में कहते हैं कि "लखणांनो पूरो रे, के त्यारे हजुं कुंवारो" इस गीत के साथ स्वामी अपने हाथ को आगे बढाये और कहने लगे कि तूं इतना बड़ा होगया आजतक तुम्हे कोई लड़की नहीं दिया । इसलिये तुम्हारे में तथा तुम्हारे माता पिता में कुछ अंतर है । इसलिये तूं कुंवारा रह गया । नहीं तो दुनिया में कोई कुंवारा रहता ही नहीं है । हजारों मनुष्य तुम्हारे चरण में गिरते हैं । फिर भी कोई तुम्हे कन्या नहीं दिया । तो अब हमारी पल्लू क्यों पकड़ता है ? छोड़ मेरी पल्लू । इस कड़ी को बोलकर स्वामी ने इतना सुंदर गीत गाया कि सम्पूर्ण सभा हंस पड़ी । अभी कुंवारा है, कही सादी नहीं हुई, इसलिये यहां बैठा है न ! यह सुनकर सभा में आनंद की सीमा न रही ।

सत्संग सुरभि

इस भगत के हृदय की घाव कौन भरे सकता है

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

कहते हैं कि गाँव में स्वामिनारायण आये है, उन्हे विनती करें तो वरसात करा सकते हैं। इन्द्र भी उनकी बात मानते हैं। चलो अभी जाते हैं। ऐसा कहकर सारंगपुर गाँव के काठी दरबार तथा कणबी पटेल एक साथ जीवा खाचर के दरबार में जाकर श्रीजी महाराज से बरसात कराने के लिये निवेदन किये। श्रीहरि भक्तों को कथा सुना रहे थे। बोलना बंद करके गाँव वालों की विन्ती सुनने लगे।

सभा में बैठे भक्त भी बोले, हाँ हाँ महाराज ! बरसात हो जाय तो अच्छा रहो। पशु-पक्षी-प्राणी सभी वरसात के बिना मरजायेंगे, सूखा पड़ गया है, वरसात होने से ताल तलैया सभी भर जायेंगे।

इसके बाद भी पानी नहीं बरसा तो मनुष्य मरने लगेंगे। इसलिये महाराज दया कीजिये - सुरा खाचर भी सुर पूरे। प्रारंभ में जो कांटे पड़े थे, उसी में कुछ बोवनी हो गयी थी, तब से आकाश की तरफ देखते ही रहते हैं, एक पटेल इस तरह कहे।

सभी की दुःख मयी वाणी सुनकर महाराज के नेत्र आर्द्र हो गये। जैसे लग रहा था कि ग्रामजनों का दुःख उन्हें लग गया है।

महाराजने कहा, चलो आंगन में बैठकर धुन-भजन करते है, इन्द्र क्यों नही सुनेंगे। वे जरुर परसेंगे। संत-भक्त सभी महाराज की आज्ञा से आंगन में एकत्रित हुये। हवा का कोई नामोनिशान नही, गर्मी से सभी परेशान हो गये। सभी धुन-भजन में तल्लीन हो गये। श्रीहरि में सभी की चितवृत्ति एकाग्र हो गयी। श्रीहरि भी एक टक अपलक दृष्टि से आकाश की तरफ देख रहे थे, मानो इन्द्र को जगाने का प्रयाश कर रहे हो। अभी दो धंडे भी नही हुये थे कि तूफानी हवा चलने लगी। मेघ के आगमन की सुवास चारो तरफ फैलने लगी।

महाराज के इशारे पर धुन वंद हुई। उन्होंने कहा अब इन्द्र जग गये हैं। अब कल तक में वरसात होगी। वहाँ से सभा विसर्जित हो गयी। सभी महाराज को प्रणाम करके चले गये। सूर्य भी महाराज को प्रणाम करके अस्ताचल की तरफ प्रस्थान किये।

ग्रामजनो के आनंद की सीमा न रही वे घर जाकर यही चर्चा कर रहे थे कि प्रभु ने आज्ञा की है कि कल तक अवश्य बरसात होगी। बड़े आनंद के साथ सभी अपनी रात्रि विताये। उधर श्रीहरि भी चिन्तन करते हुये सो गये। रात के अन्तिम प्रहर वीतते ही चारो तरफ काली घटा घिरने लगी। बादल उमड़ने लगे। ठंडी हवा के झोंकों के साथ तूफानी वरसात चालू हो गया। ऐसा लग रहा था कि प्रलय की स्थिति हो जायेगी। अनावृष्टि अतिवृष्टि में परिवर्तित हो गयी। फल्गु नदी का पानी गांवो में भरने लगा। लोगों के घरों में पानी भर गया। कितनो के मकान धराशायी हो गये। जीवाखाचर का घर भी गिदने जैसे हो गया। इधर बरसातबंद हुआ नहीं कि महाराज जीवा भक्त की परीक्षा लेने लगे।

हम मना कर रहे थे कि यहाँ हमारा निवास मत करवाइये लेकिन माने नहीं, अब देखो यह मकान गिरने जैसा लग रहा है। अब हम कहाँ जायें।

अरे महाराज ! इसमें परेशान होने की क्या बात ? चलिये मेरे साथ, अभी एक मकान नया बनाये हैं। यह भले गिर जाय। जीवा को अपने मकान की अपेक्षा श्रीहरि की विशेष चिंता थी। बरसते पानी में कांपते हुये पुराने मकान से नये मकान में चले गये। इधर पुराना मकान गिर गया। गिरने की आवाज आयी। रात बीत रही थी। श्रीहरि तथा जीवा भक्त जैसे तैसे नये मकान में तो पहुंच गये, लेकिन महाराज अभी भी भक्त की पहचान करना चाहते थे। जीवा खाचर मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। इसी समय भोजन बनाओ। जल्दी करो हमसे रहा नहीं जा रहा है।

जीवा भक्त ने देखा तो नये मकान के चूल्हे में पानी भर गया था। उन्हें एक विचार आया। उनके पास एक नया कुंड थाउसे तोड़ दिया। नीचे के भाग को चूल्हा बनाया। लेकिन लकड़ी कहाँ से लाये, जो थी वह सब भींग गयी थी। महाराज भक्त की चिंता को देख रहे थे। जैसे कोई बालक

किसी परेशानी में हो और पिता उसे देखता हो । जीवाखाचर की बिना विलम्ब किये एक नया पीठा था उसे फाड़कर डुकडा करके अग्नि प्रज्वलित करके ब्रह्मचारी को बुलाये और भोजन तैयार कराकर भोजन कराये । श्रीजी महाराज खूब प्रसन्न हुए क्योंकि महाराज जो मांगे वह भक्त ने किया । भोजन करके महाराज सो गये । उधर पानी की गति बंद ही नहीं हो रही थी । इतने में नये मकान में से भी कडडड की आवाज आने लगी ।

जीवा खाचर दौड़कर महाराज को जगाया कि महाराज ? यह मकान भी गिर जायेगा । इसमें से भी आवाज आने लगी है । कभी भी यह नया मकान गिर सकता है । इसलिये आप देवा खाचर की हवेली में आराम करने के लिये पधारिये ।

श्रीहरि देवा खाचर के यहाँ जाकर सो गये । इधर जीवा खाचर की नई हवेली भी गिर गयी । इतना होने पर भी जीवा प्रभु से रक्षण नहीं मांगा । महाराज प्रसन्न रहें यही वे चाहते थे । कितनी समझदारी थी । प्रातः हुआ । इन्द्र थोडा रुके, लेकिन पुनः चालू हो गये । सम्पूर्ण दिन पानी गिरता रहा । पुनः रात्रि में तांडव प्रारंभ हो गया ।

अब सभी इस बरसात से त्राहिमां हो गये थे । इस रात्रि में भी प्रभु देवा खाचर की हवेली में सोये थे । सोते-सोते बरसात का दृश्य देख रहे थे । "अहाहा शुं वरसादनी हेली छे !" चारो तरफ दृष्टि किये तो पानी ही पानी । इन्द्र का यह कोप महाराज को सहन नहीं हुआ । तुमने यह क्या किया ? ऐसा लग रहा था कि प्रभु इन्द्र की नजर में नजर किये हो और वरसात धीमी होगयी ।

इतने में लखा नामक भक्त का घर गिरने की तैयारी में था। घर के नीचे पशु बंधे थे । लखा भक्त जीवन की आशा छोड़ दिया था । घर गिरने की डर से जोर-जोर से चिल्लाने लगा । लेकिन उस बरसाद में कौन किस की सुन रहा है । अंत में लखा श्रीहरि की याद किया । हे महाराज ! मेरी रक्षा कीजिये इस प्रार्थना को सुनकर महाराज को हुआ कि यह मेरा भक्त लखा है, निश्चित कीसी आपत्ति में है ।

एक मिनट का विलम्ब किये बिना श्रीहरि उस बरसते पानी में नंगे शरीर दौडते हुए उस भक्त के घर पहुंच गये । उधर वह भक्त आँखे बंद करके प्रभु का स्मरण कर रहा था । महाराज पहुँचकर उसके मकान की बड़ेर अपने स्कन्धपर रख कर गिरते मकान को रोक कर खड़े होकर उस भक्त की भक्ति को देख रहे थे ।

देवा भक्त को हुआ कि महाराज मेरी प्रार्थना सुन लिये हैं इसलिये अब मेरा घर स्थिर हो गया है । वह आंख खोलकर प्रसन्न मन से अपने मकान को तथा बंधे पशुओं को देखने गया तो सभी को सुरक्षित देखा, इतने में विजली की चमक में देखा तो महाराज मकान की बड़ेर पकड़कर खड़े हैं ।

अरे, महाराज ? मेरे लिये आप बड़ेर पकड़कर खड़े हैं । आप कितनी कृपा किये हैं ।

वर्षा रुक गई थी । लाखो भक्तगण एकसाथ दोड़े । दस-बारह आदमियों को बुला लाये । श्रीहरि वहाँ से चले गये । भक्तों ने उनके कंधे को देखा तो उसमें थोड़ासा गढ्ढा पड़ गया था । सभी ने कहा, "अरे महाराज, आपको इतना सहना पडा ?"

महाराजने करुणा भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा । उन्होंने कहा, "कंधे का घाव तो आसानी से ठीक हो जायेगा । परंतु भक्तों के हृदय के घाव कैसे भरेंगे ?"

लखा भक्त श्रीजी के चरणों में गिर गये । आंखो के गरम गरम अंश्रुओं से महाराज के चरणों को प्रक्षालित कर दिया । वर्षा की इस लीला से भक्त और भगवान दोनों की परीक्षा थी ।

जीवा भक्तने जिस प्रकार अपना फर्ज निभाया उसी प्रकार महाराजने भी लखा भक्त की रक्षा करने में पूर्ण योग दिया ।

महाराजने केवल समाज को ही ज्ञान प्रदान नहीं किया परंतु मानव सेवा के अमूल्य पाठ भी शिखायें । अपने भक्तों के साथ मिल-जुलकर उनके सुख-दुःख में हिस्सेदार बने थे ।

तीसरे दिन सूर्यदेव प्रसन्नमुख से उदित हुए और भक्त तथा भगवान की ऐसी अनुपम एकता में भाव विभोर बनकर अवन को उज्जवलित कर रहे थे ।

अनंत कोटी ब्रह्मांडो के नाथ की पदवी उन्हें ऐसे ही नहीं प्राप्त हुई ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

एक साथे सब सधे

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एकाग्रता का मतलब क्या है ? खबर है क्या ? इसका मतलब है सावधानी । चाहे जितना कोई सोरगुल करता हो, चाहे कोई आये या जाये, कितनी भी आवाज होती है फिर भी ध्यान की एकाग्रता भंग नहीं होती । शिक्षापत्री में इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं अपने लिये "एकाग्रेणैव मनसा" यह लिखकर सम्पूर्ण सत्संग के लिये मन को केन्द्रित करने की बात की है । एकाग्र मन से मेरी कथा सुनना । अपने मन को भगवत आराधन में एकाग्र रखना । जीवन में भी प्रगति के किये एकाग्रता बहुत जरुरी है । इस वात को आगे समझाते हैं ।

दत्तात्रेय भगवान एकवार किसी लोहार की दुकान के पास से जा रहे थे । सामने से राजा के सिपाही घोड़े पर सवार होकर आ रहे थे । राजा की सवारी आ रही है, इसलिये वे घुड़ सवार सभी को हटाते जा रहे थे । हटो हटो की आवाज सुनकर दत्तात्रेय भगवान एक चबूतरे पर चढ गये । चबूतरे पर से देखा तो लोहार अपना काम कर रहा था । रास्ते पर ही दुकान थी । उधर राजा की सवारी के साथ आने वाले नाना प्रकार के नृत्य करते हुये, बाजा बजाते हुये आ रहे थे । वाद्ययंत्रो की आवाज सुनकर नगरजन अपने-अपने दरवाजे वंद करके सवारी देखने सभी निकल पड़े । रास्ते के दोनो तरफ खूब भीड़ थी । खूब कोलाहल हो रहा था । बाण बनाने वाले उस लोहार के चबूतरे पर चढ़कर दत्तात्रेय कभी लोहार की तरफ देखते तो कभी बाहर का कोलाहल । यद्यपि उस सवारी के कोलाहल से भगवान दत्त को कोई लेना देना नहीं था । वारंवार वे लोहार के कार्य को देखते रहे । जब तक वह राजा की सवारी वहाँ से दूर नहीं चली गयी तब तक लोहार को देखते रहे । सवारी के जाने के बाद रास्ता साफ हो गया । आवाज, शोर गुल सब बन्द हो गया । अब दत्त भगवान चबूतरे से नींचे उतरे और चलने लगे । लेकिन उस लोहार की तन्मयता देखकर वे मन ही मन विचार करने लगे कि आज से यह लोहार भी मेरा गुरु है । कारण यह कि मन की एकाग्रत आना यह बड़ा तप है । इतने धूम धाम से राजा की सवारी लोहार के दरवाजा के सामने से गयी तथा हजारो लोग अगल बगल से आकर सवारी देखने में लगे रहे, लेकिन वह लोहार अपने कार्य से एक सेकेन्ड के लिये दृष्टि ही नहीं उठायी । एक ही जगह पर सम्पूर्ण शक्ति लगाने से कितना ही कमजोर व्यक्ति हो उसे निश्चित ही सफलता मिलती है । लेकिन एक बलवान में बल भी होता है तथा बुद्धि भी होती है फिर भी वह कुछ नहीं कर पाता है । एक-एक बूंद पत्थर पर निरन्तर गिरते रहने से पत्थर पर निशान पड़ जाती है । वेग से धारा प्रवाह बहता हुआ पानी पत्थर से निकल जाता है, निशान नहीं बना पाती है । अनेक लोग फूल को सूंघते है लेकिन पुष्पराग तो भ्रमर ही लेजाता है । धनुष में से छूटा हुआ बाण अगल बगल नहीं जाता वह सामने अपने लक्ष्य को ही वींधता है । यदि कपड़ा धोने वाला साबुन अच्छा होगा तो मैल तुरंत निकल जायेगी । यदि वह पत्थर की तरह

कठोर होगा तो धिसते रहने पर भी कुछ नहीं होता। इसी तरह एकाग्रता पूर्वक किये गये अध्ययन, स्वाध्याय अभ्यास से विद्या स्वत: प्राप्त की जा सकती है।

अन्यथा जीवन भर पढने पर भी सफलता हाथ नहीं आती है। क्योंकि एक समझकर पढ़ता है और दूसरा अन्य मनस्क होकर पढता है। यही दोनो में अन्तर है।

बाल मित्रो ! यही एकाग्रता अभ्यास में, पढने में, भक्ति में आवे तो बेड़ा पार हो जाय। एक साथे सब सधे सब सा सब जाय। एक काम सिद्ध करो तो सब सिद्ध होता है, यही एकाग्रता विना सिद्ध करने जायेंगे तो एक भी सिद्ध नहीं होगा।

•

संसार सागर कैसे पार करेंगे

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एकबार मुक्तानंद स्वामी अपने संत मंडल के साथ सत्संग के लिये विचरण कर रहे थे। उस समय जंगल से होकर जाना होता था। अंधकार हो गया नदी पार करके जाना था, अब उस नदी को कैसे पार किया जाय, कोई आदमी भी दिखाई नहीं दे रहा था, जिससे सलाह ली जासके। नजदीक में कोई ऐसा स्थल भी नहीं दिखाई दे रहा था जहाँ रात बिता सकें। कारण यह कि जंगल था।

किनारे रहने लायक भी नहीं था। वाघ की गर्जना सुनाई दे रही थी। वह यहाँ कभी भी आसकता था। मुक्तानंद स्वामी के मन में हुआ कि हमें भजन करने से मतलब यहाँ करें या अक्षरधाम में करें, यदि वाधखाभी जाता हैं तो कोई वात नहीं, मरने से क्या डरना। जिस भक्त को भय नहीं होता, वह निर्भय हो जाता है फिर तो भगवान उसकी रक्षा करते हैं।

स्वामिनारायण भगवान भूदेव (ब्राह्मण) के वेश में वहाँ आये। उनकी शरीर पर उत्तर वस्त्र एवं अधोवस्त्र सुशोभित हो रहा था। मस्तक पर तिलक चंदन किये हुये थे। मुक्तानदं स्वामी के पास आकर बोले क्यों साधुजी। यहाँ क्यो बैठे है ? स्वामीने कहा आगे नदी है, और अंधकार भी हो गया है। जंगल में वाघ की आवाज भी सुनाई दे रही है। फिर भी भगवान के भरोसे बैठे है। इस में घबड़ाने की क्या बात है ? नदी तैर जाइये। नदी में अगाधपानी है, इसे कैसे पार करेंगे ? मेरे पीछे-पीछे आइये। आप लोग बड़े भोले दिखाई दे रहे हैं। हम इस गाँव के रहनेवाले हैं। इस नदी में कहाँ कितना पानी है, सब ख्याल है। इधर से आइये, इधर नदी छिछली है।

ब्राह्मण देवता आगे-आगे चले और मुक्तानंद स्वामी संत मंडल के साथ पीछे होलिये। जिधर से ब्राह्मण देवता नदी पार कराये वहाँ घुटने तक ही पानी था। ब्राह्मण देवता उन्हें पार करके उनसे कहे कि लीजिये अब आप पार हो गये, आप को जहाँ जाना हो जाइये, भजन कीजिये। मुक्तानंद स्वामीने कहा कि ब्राह्मण देवता। आपका नाम क्या है ? वे अपना नाम बताने से पहले अदृश्य हो गये। स्वामी बड़े आश्चर्य में पड़ गये। वे निश्चय कर लिये कि भगवान स्वामिनारायण के सिवाय कौन हो सकता है।

सज्जनो ! यदि भगवान का दृढ आश्रय रखेंगे तो वे नदी क्या संसार सागर से पार करदेंगे। लेकिन मन में प्रभु के प्रति निष्ठा, भाव की एकाग्रता, मानसिक पवित्रता ये सब होने पर ही प्रभु हाथ पकड़ने आयेंगे। इस लिये भगवान का दृढ आश्रय रखकर भजन भक्ति करना चाहिये।



भक्ति सुधा

वचन में विश्वास

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

संत कहते हैं कि यह मानव शरीर केवल महाराज को पाने के लिये मिली है। जिसमें अकल हो वह दुनिया की अकल न करें। भगवान की जो अखंड भजन करता है उसे ही भगवान मिलते हैं। संतो की सत्संगति के बिना यह संभवन नहीं है। जिस तरह स्त्री, पुरुष प्राप्ति के बिना संभव नहीं है। इसी तरह सच्चे संत के विना श्रीजी का मिलना संभव नहीं है। वरसात के विना वसुन्धरा सुखी रहती है, उसी तरह संत समागम के बिना हृदय सुखा हो जाता है। वरसात के वरसने पर जैसे पृथ्वी हरियाली से भरजाती है, वैसे ही सच्चे संत के मिलने पर भक्त जब भगवान का आश्रित हो जाता है तो उस जीव का कल्याण हो जाता है। ऐसी भगवान तथा भक्त की महिमा है। लेकिन भगवान तथा संतो के वचन में विश्वास रखना आवश्यक है।

जूनागढ में हरिराम माली था। वह नवाब साहब का नौकर था। वह प्रतिदिन इतना पाप करता कि जिसकी कोई सीमा नहीं। कबूतरों को मारकर उनके जीभ की सब्जी बनवाता था और उस सब्जी को नवाब को खिलाता था। एक समय जन्माष्टमी के दिन सम्पूर्ण शहर के लोग स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन करने आये, उसी में वह माली भी दर्शन करने आया। उस समय सभा मंडल में वचनामृत के गढडा का मध्य प्रकरण वांचा जा रहा था।

उसमें ऐसा आया कि चाहे कितना पापी अधम जीव हो वह भगवान की शरणागति स्वीकार करले तो उसका सब पाप भस्म हो जाता है। वह माली यह सुनते ही विचार में पड़ गया कि क्या प्रभु के शरण में जाने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं ? तो निश्चित ही हम संतो से पंचवर्तमान धारण करके प्रभु के आश्रित हो जायेंगे। क्योंकि हमारे जितना अधम-पापी कोई नहीं होगा। यह विचार करते ही उसी समय सभा मंडप में जाकर संतो के पैर में गिर गया और कहने लगा कि मैं बहुत बड़ा पापी हूँ हमारा उद्धार कीजिये। सभी संतोने उसे ढांढस बधाया और कहा कि अब तुम निश्चित होजाओ, तुम्हारा सभी पाप प्रभु नाश कर देंगे। संतो ने कहा अब से तुम पंचवर्तमान का पालन करना, मदिरा नही पीना, गलत आचरण मत करना, अन्य का आश्रय मत लेना। यह सुनकर उसने सभी स्वीकार कर लिया। बाद में संतो ने उसे पूजा की पेटी दी, अब वह पक्का सत्संगी हो गया। प्रतिदिन बगीचे से फूल लाता, फूल का हार बनाता प्रतिदिन कथा में आता तथा संत समागम करता, जिससे उस के पूर्व के सभी पाप भस्म हो गये और मन में शांति का अनुभव करने लगा।

बाद में प्रभु स्वयं उसे दर्शन देकर अपने साथ धाम में ले गये। इस तरह जो बड़ो के वचन में विश्वास रखकर प्रभु की भजन करेंगे तो अवश्य अविचल पद की प्राप्ति होगी। साधु के सत्संग से ही जीवात्मा परमात्मा की पहचान संभव है। बाद में उस भक्त के हृदय में प्रभु की अविचल भक्ति का निवास हो जाता है। जहाँ सत्य है वही सुख-शांति, धर्म-नीति का निवास होता है। वहीं पर भगवान का निवास होता है। जहाँ पर कपट, दगा, ईर्ष्या, राग, द्वेष हैं वही पर कलियुग का निवास है। लेकिन यह वात जगत के लोगों के गले नहीं उतरती। इसीलिये तो मूर्ति को छोड़कर लोग कीर्ति की तरफ दौड़ते रहते हैं, उन्हे यह पता नहीं कि कीर्ति तो यहीं कि यहीं रहेगी, साथ मात्र भजन-भक्ति जायेगी। इस लिये संतो का समागम करके भगवान की भक्ति का मार्ग श्रेयस्कर होगा। जब आत्मा परमात्मा को पहचानेगा तभी मोक्ष होगा। जो वृत्ति को जला दे वही प्रभुको प्राप्त कर सकता है। इसलिये सच्चे गुरु के साथ सत्संग करना चाहिये। उन्हीं के वचन में विश्वास रखना चाहिये। वही पार लगा सकते हैं।

●

जतनबा

- पटेल आनंदीबहन विष्णुभाई (गुलाबपुरा)

एक समय श्रीहरि लांधणज में विराजमान थे। उस समय प्रभु ने दो भक्तों को करजीसण एवं डांगरवा के लिये रवाना किया कि इस गांव में प्रभु कल पधार रहे हैं।

दोनो गाँव के समुदाय प्रभु के स्वागत के लिये निकल पड़ा। उन दोनों गाँव के मध्य में एक विशाल वटवृक्ष था। वहीं पर दोनों गाँव का संघ एकत्रित हुआ। थोड़े समय के बाद श्रीहरि पांच सौ परम हंसो के साथ वहाँ पहुँच आये।

उस समय दोनों गाँव के बीच यह चर्चा होने लगी कि पहले मेरे गाँव में प्रभु पदार्पण करेंगे, इस तरह का विवाद छिड़ा कि स्वयं श्रीहरि भी निर्णय करने में असमर्थ हो गये। बाद में प्रभु ने कहा कि मैं माणकी के ऊपर से कूदकर वटवृक्ष की डाल पर बैठ जाऊँगा और माणकी जिस गाँव की तरफ जायेगी, उस गाँव में प्रथम पदार्पण होगा।

डांगरवा की भक्ता जनतबा तथा करजीसण के भक्त गोविंदभाई इस निर्णय को मान्य रखे। इसी प्रमाण के अनुसार श्रीहरि वटवृक्ष पर चढ गये और माणकी डांगरवा की तरफ चल पड़ी। यह देखकर करजीसण के भक्त गोविंदभाई व्यंग्य में कहे कि माणकी स्वयं स्त्री है और जतनबा भी स्त्री है इसलिये माणकी उसका पक्ष रखी है। दोनो संघ डांगरवा पधारा। जतनबा श्रीहरि का भव्य स्वागत की।

एक बार श्रीहरि ने जनतबा से पूछा कि तूं हर समय आमंत्रण देती रहती है और कहती है कि जब आप पधारें तब अपने पांच सौ परम हंसो के साथ पधारे मैं सभी को दूध-दहीं से स्नान करादूँगी। वह समय आ गया। महाराज सायंकाल डांगरवा पधारे। अपनी भक्ता के भक्ति की परीक्षा लेने के लिये कहे कि जतन आज तुम्हारे दूध-दहीं समाप्त करके तेरी इज्जत का मटियामेल करदेंगे। जतनबा ने भी कहा महाराज ! मैं भी आपकी आश्रिता भक्ता हूँ। मैं भी चारो तरफ यह प्रचार कर दूंगी कि श्रीहरि के आश्रितों को प्रसाद की कमी रहती है। इसलिये आपकी प्रतिष्ठा भी खतरे में हो जायेगी।

इस प्रकार भक्त एवं भगवान के संबाद को सुनकर सभी को आनंद हुआ। श्रीहरि ने अखंड अस्खलित दूधकी धार भोजन के समय सभी को परसे तो भी कम नहीं हुआ। महाराज प्रसन्न होकर जतनबा से विदाई लेकर करजीसण पधारे।

जनतबा की शुभ निष्ठा देखकर सम्पूर्ण गाँव सत्संगी हो गया। दंढाव्य देश के पवित्र धामों में डांगरवा की गिन्ती होने लगी। इसका यश डांगरवा की जनतबा, अगरोजी, तथा अमराजी को मिला।

एक समय जनतबा श्रीहरि का दर्शन करने गढडा गयी। श्रीहरिने पूछा कौन ? जतनबा ने उत्तर दिया कि मैं आत्मा, श्रीहरि भोजनालय से जलता अंगारा मंगवाये और जनतबा के हाथ पर रखे, लेकिन इस स्थूल को जो हो पर सूक्ष्म शरीर का कुछ भी नही हुआ। उन्हें आग रखी गयी है इसका ज्ञान भी नहीं रहा। इस तरह जतनबा श्रीहरि की अग्नि परिक्षा में खरी उतरी ! ऐसी जतनबा को कोटि-कोटि वंदन।

•

कर्मयोगी होकर भजन करो

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

श्रीजी महाराज के ऐश्वर्य-प्रताप से एकमात्र गुजरात से ही नही परंतु समग्र हिन्दुस्तान में सत्संगी हुये हैं।

उत्तर प्रदेश के धुवा गाँव में ठाकुरदास नामक भक्त रहता था। उनकी पत्नी का नाम धनुबाई था। ये दोनो पति पत्नी श्री स्वामिनारायण के सत्संगी हो गये थे। प्रेम से श्रीहरि का अहर्निश भजन करते रहते थे।

श्रीजी महाराज का निष्काम वर्तमान एवं वैराग्य की असर इन दोनो पर खूब थी। इन दोनो ने निश्चय किया कि हम भले ही गृहस्थी है, पति-पत्नी के रुप में रहते है फिर भी ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। आज से हम सांख्ययोग का पालन करेंगे.

खूब संयमित जीवन जीने लगे। इनके त्याग को देखकर भगवान के भक्त उनका वन्दन करने लगे। लेकिन अन्य लोग निन्दा भी करते थे। ये दोनो पति पत्नी लगता है जैसे ब्रह्मचारी हो गये है, सभी लोग इनके चरण रज को चढा रहे हैं, इस तरह मजाक करते थे। कुछ तो ऐसा भी कहते है कि जब ब्रह्मचारी ही रहना था तो विवाह क्यों किये कैसा स्वामिनारायण का सत्संग है।

अपने भक्त की निन्दा श्रीहरि से देखी नही गयी। फिर वे विचार किये कि इस तरह मेरे भक्त की निन्दा ठीक नहीं तथा गृहस्थाश्रम में रहकर सांख्ययोग का पालन भी ठीक नहीं, इसलिये प्रभु स्वयं दिव्य रुप से दोनो के बीच में प्रगट हुए। प्रभु को अपने सामने प्रगट देखकर दोनो दम्पति बड़े आश्चर्य में पड़ गये और कहने लगे प्रभु आप इस समय यहाँ ? प्रभु ने कहा भक्तराज ! हम आप दोनो के नैष्ठिक व्रत से प्रसन्न होकर आये है, अब इस व्रत की पूर्णाहुति कर दीजिये। इस लिये कि जो एकनारी व्रत रखता है वह सांख्ययोगी के समान ही रहता है। अग्नि को साक्षी करके पति पत्नी दोनो का विवाह हुआ हो तथा पति पत्नी गृहस्थ धर्म का आचरण

करें वही उत्तम व्रत है। हम जिन गृहस्थ धर्मो का वर्णन किये हैं उन सभी को जो निष्ठापूर्वक पालन करता है वह त्यागी के समान ही है। इसलिये हे ठाकुरदास ? आप आज से यह कठोरव्रत त्याग कर शास्त्रमर्यादानुसार गृहस्थ धर्म का पालन करो। हमारी यह आज्ञा है एक कर्मयोगी होकर मेरी भजन करो।

श्रीजी महाराज इस प्रकार व्रत की पूर्णाहुति कराकर दोनो को आशीर्वाद दिया। बाद में दोनो प्रभु को प्रणाम करके उनकी आज्ञा का पालन करने का वचन दिये। प्रभु मंदमुस्कान करते रहे और दोनो दंपत्ति उस मुखारविन्द के दर्शन में डूबे रहे कि प्रभु अन्तर्ध्यान हो गये। "माटे मानी अमारुं वचन, कर्म योगी थई ने करो भजन।"

●

अगतराई के पर्वतभाई

- आरतीबहन पनाश (राजकोट)

"महाराज एकत्रित करना चाहिये" मुक्तानंद स्वामीने ऐसा महाराज से कहा। महाराज करीब २० जितने सदाव्रत चालू किये थे। ऐसी परंपरा प्रारंभ किये थे कि इस व्रत को चालू रखने के लिये अगल-बगल के गाँव से अनाज लाना पड़े तो वह भी किया जाय। लोज के गाँव में सदाव्रत के समय थोड़ी तंगी आगयी तो महाराजने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि हम दोनो अनाज मांगने चलते हैं।

दोनो एक साथ निकल पड़े और केशोद के पास अगतराई गांव में पहुंचे। वहाँ के हरिभक्त पटेल पर्वतभाई थे। वे रामानंद स्वामी के शिष्य थे। महाराज जब रामानन्द स्वामी से प्रथमवार पिपलाणा में मिले थे उस समय पर्वतभाई उपस्थित थे। महाराज अनाज लेने स्वंय उनके घर पधारे, यह देखकर पर्वतभाई बहुत प्रसन्न हुये। दोनो को भीतर लेजाकर कहे कि यह दश कोठी का अनाज कृष्णार्पण कर दिया। महाराज ! मैं बैलगाड़ी की व्यवस्था करके आता हूँ। इस तरह सोलह कोठी अनाज बैलगाडी में लदवा कर गाड़ी से भेंज दिये। मुक्तानंद स्वामी ने कहा भक्तराज ! अब हमें अन्यत्र जाने की जरुरत ही नहीं है। महाराज ने कहा कोठियों को खाली कर दिये बच्चों के लिये रखे या नही ? कम से कम एक वर्ष के लिये तो रखना चाहिये। पर्वतभाईने कहा महाराज ! आप जैसे लेने वाला कहाँ मिलेगा इसलिये सर्वस्व दान कर दिया।

प्रभु ! इस घट में अनाज देने वाले आप ही है, आप को वापस कर दिया, इस में हमारा क्या है। सब कुछ आप का है ऐसा कहकर चरण में गिर पड़े।

अगतराई, कालवाणी तथा माणावदर इस तरह तीन गाँवो में पर्वतभाई की खेती थी। तीनो जगह खेती करते और वहाँ रहते भी थे। लेकिन महाराज की प्रथम मुलाकात अगतराई में होने से वे अगतराई के कहलाये।

एकवार पर्वतभाई वर्षात में हलजोत रहे थे। उसी समय पूजा का समय हो गया। लेकिन आसन पर बैठकर पूजा करने का स्थान नहीं था, तो हलचलाते हुये मानसिक पूजा करने लगे। मानसिक पूजा में उन्होंने देखा कि, महाराज सामने आकर बैठे है और मैं सामने खड़ा हूँ। प्रभु को मैं भोजन करा रहा हूँ। बड़ी नम्रता के साथ उस मानसिक पूजन में प्रभु को रोटी, दहीं तथा अन्य भोज्य पदार्थ खिला रहे हैं, बैलों की डोरी थोड़ी ढीली हो गयी वे सब खड़े हो गये और पर्वतभाई कहते जा रहे है प्रभु और खाइये। एक वार पर्वतभाईने दहीं उठाकर प्रभु की थाली में डाला तो वह कुछ खाये और कुछ छोड़ दिये। बगल के खेतवालेने जोर से आवाज दी कि हाथ में से दहीं हल के ऊपर गिर गयी। उसने पूछा कि अरे पर्वतभाई ? क्यों सो रहे है क्या ? यह दही कहाँ से गिर गयी। तब पर्वतभाई ने कहा, हाँ कुछ ऐसा ही हुआ, अभी प्रभु आये थे उन्हे भोजन करा रहा था, वे कुछ खाये और कुछ छोड़ दिये, कुछ मेरे हाथ से गिर गयी। आज तो मेरा संकल्प सिद्ध हो गया।

एकवार गढडा से महाराज का पत्र लेकर मयाराम भट्ट आये। प्रभु का पत्र पढते ही वे घर से बाहर निकल गये। भट्टजी ने कहा अरे पर्वतभाई ! इतनी जल्दी मत करो आप का बेटा बहुत बिमार है, अंतकाल जैसा दिखाई दे रहा है। पर्वतभाईने कहा भट्टजी ! आप ही इस पत्र को पढिये, प्रभु ने पत्र में लिखा है कि तुरंत गढडा आजाओ। तो अब इस पत्र के बाद अपना कौन सगा संबंधिहै। यह कहते हुये वे चल दिये गाँव के बाहर पहुँचे कि पीछे से आदमी आते देखे। वे समझ गये और कहने लगे कि मेरा बेटा भगवान के धाम में गया, अब आप लोग शोक मत करना। आपलोग अग्नि संस्कार कर दीजियेगा जय स्वामिनारायण कहकर नदी में स्नान के लिये उतरे कि पहुँच गये गढडा। यह कैसी समझ... !

..... प्रश्नपेटी .....

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर

प्र.१ ईश्वर किसे जानना ? शिक्षापत्री के अनुसार लिखो ?

प्र.२ पंचाला में शरद पूर्णिमा की रात्रि में चंद्रपूर्ण रुप से प्रकाशित हो रहा है । संत हाथ में करताल तथा पैर में घुघुरु बांधकर नृत्य करने लगे । श्रीहरि भी इस दृश्य को देखकर रास में जुड़ गये । स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीने इस दृश्य को देखकर कौन सा कीर्तन गाया था ।

प्र.३ ईश्वर की वाणी कितने प्रकार की है ? उसका नाम लिखो ?

प्र.४ "हरि लीला कल्पतरु" नामक विशाल संस्कृत ग्रंथ किसने लिखा ?

प्र.५ "सूता उठी रे समरुं सहजानंद के वेणला भले वाया रे" - इस सुंदर कीर्तन को कौन गाया था ?

प्र.६ स.गु. अद्‌भुतानंद स्वामी के पूर्वाश्रम के दो भाई दीक्षा लेकर साधु हुये थे, वे दोनो कौन थे ?

प्र.७ निष्कुलानंद स्वामी "हृदय प्रकाश" नामक ग्रंथ किस साल तथा किस तिथी में लिखे थे ?

नवम्बर मास २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१)कुंडल की राय बा ।

(२)स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी ।

(३)आचार, व्यवहार तथा प्रायश्चित इन तीनो बातों को देश, काल, अवस्था, द्रव्य, जाति, सामर्थ्य इत्यादि के अनुसार समझना चाहिये ।

(४)बाबी बहादुर नवाब ।

(५)१. स.गु. आत्मानंद स्वामी २. स.गु. रामानंद स्वामी

(६)हिरण्याक्ष के पुत्र का नाम उत्कच था ।

(७)अला पटेल ।

१. स.गु. घनश्याम स्वामी - जमीयतपुरा
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर पुरुषोंका - सीतापुर
३. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
४. पटेल जयदीप अंबारामभाई - घूंटुं
५. पटेल विष्णुभाई जीवाभाई - सीतापुर
६. सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई - अहमदाबाद
७. सांख्ययोगी मंजुबा, भारतीबा - अहमदाबाद हवेली
८. भावसार अरविंदाबहन - चांदलोडिया
९. भावसार वीणाबहन आर. - नवरंगपुरा
१०. सां.यो. शिल्पाबा, शीतलबा - अमहदाबाद हवेली
११. पटेल ज्योत्सनाबहन राजूभाई - आनंदपुरा
१२. पटेल भक्तिभाई भोलाभाई - राणीप
१३. पटेल गंगाबहन भक्तिभाई - जुलासण
१४. सां.यो. रेखाबा, रसीलाबा - अहमदाबाद हवेली
१५. सां.यो. रंजनबा, अस्मिताबा - बालासिनोर
१६. सां.यो. अल्पाबहन गु. शिल्पाबहन - गढडा-
१७. मोदी अमृतलाल के. - सोजा
१८. पटेल विनोदभाई पी. - वहेलाल
१९. ठक्कर हसुबहन के. - इसनपुर
२०. पटेल गोरधनभाई शंकरलाल - सोजा
२१. सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा - सुरेन्द्रनगर
२२. कनुभाई रावल - अहमदाबाद

सत्संग समाचार

रामनगर (त. कलोल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट के महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी एवं स.गु. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री पटेल नारायणदास पुंजीराम परिवार के पटेल प्रभुभाई नारायणदास, पटेल अमृतभाई नारायणदास तथा डॉ. चिमनभाई नारायणदास की तरफ से उनकी माताजी गं.स्व. पटेल संतोकबहन नारायणदास की जीवन चर्या के प्रसंग पर ता. ८-११-०९ को प्रातः ५-३० बजे प्रभात फेरी, ७-३० से ९-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा ८-०० से १०-०० तक शा.स्वा. रामकृष्णदासजी की कथा का आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग के यजमान के आमंत्रण का मान रखकर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। तथा समस्त यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे। - शा. चैतन्यस्वरुपदास

नवावाडज मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रबोधिनी एकादशी के दिन ठाकुरजी के समक्ष महापूजा का आयोजन प्रातः ८-०० बजे से १२-३० बजे तक किया गया था। श्री गोपालभाई शास्त्री ने सुंदर विधिकरायी थी। मुख्य यजमान प्रो. रमेशभाई जेठाभाई कोदिया परिवार, सह यजमान पटेल अशोकभाई नागजीभाई थे। ८५ जितने भाई बहनों ने महा पूजा का लाभ लिया था। - शंभुभाई हीरजीभाई पटेल

खारोल (पंचमहाल) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव विभाग के पंच महाल जिला के खारोल गाँव में हरिमंदिर का निर्माण होते ही ता. ३१-१०-०९ को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा वैदिक विधिसे संपन्न हुई थी। इस प्रसंग पर ता. २९-१०-०९ से ३१-१०-०९ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धका पारायण शा.स्वा. विश्वस्वरुपदास गुरु सूर्यप्रकाशदासजीने किया था।

ता. ३१-१०-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। उस समय समस्त गाँव के लोगों ने एक साथ मिलकर बड़े धूमधाम के साथ स्वागत किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति की प्रतिष्ठा की गयी थी। बाद में कथा की पूर्णाहुति करके पू. महाराजश्री सभा में पधारे थे। इस प्रसंग की सेवा करने वाले यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

अहमदाबाद मंदिर के प.पू. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, पुराणी स्वा. हरिकृष्णदासजी संतो ने सुंदर उद्बोधन किया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद दिया था। समस्त उत्सव एवं मंदिर निर्माण का कार्यभार स्वा. हरिस्वरुपदासजीने लिया था। जिनका समस्त गाँव के लोगों ने सन्मान करके आभार व्यक्त किया था। - प. पू. दिलीपभाई

जीवराजपार्क-मेघाणीनगर में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से शा. विश्वस्वरुपदासजी जीवराजपार्क तथा मेघाणीनगर विस्तार में प्रति एकादशी की रात्रि सभा का आयोजन करके कथा का लाभ देते हैं। सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य समझाते हैं। श्री नरनारायणदेव में लोगों की

निष्ठा बढे ऐसा वे समझाते हैं। - धनंजय पटेल

कपडवंज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के प्रसंग पर समूह महापूजा, अन्नकूट दर्शन तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से किया गया था। हरिभक्त देवदर्शन तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का चरण स्पर्श करके धन्य हो गये थे । प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा पी.पी. स्वामीने भगवान की तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा समझायी थी। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

पुजारी लालभाई तथा हरिभक्तोने सुंदर सेवा का लाभ लिया था। - को. डॉ. जयराज त्रिवेदी

बालासिनोर

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था । एकादशी को प्रातः से ही गणेश स्थापन मंडप पूजन तथा दोपहर में ४-०० बजे भगवान को रथ में बैठाकर शहर में रथयात्रा निकाली गयी थी । मंदिर में ब्राह्मणों द्वारा तुलसी विवाह विधिधूमधाम से संपन्न की गयी थी। इस प्रसंग पर युवक मंडलने सुंदर सेवा की थी। -रमेश भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.स्वा. वासुदेवनारायणदासजी की प्रेरणा से आश्विन शुक्ल एकादशी को ठाकुरजीका भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। हरिभक्तों ने कीर्तन, धुन, आरती की थी। मुनि स्वामी ने काली चौदश की महिमा समझायी थी। इस के साथ ही मारुति यज्ञ का प्रोग्राम भी रखा गया था। इस प्रसंग पर प्रत्येक गाँव के हरिभक्त उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिये थे। - डाभी मफाजी साहेब

उवारसद में श्रीमद् भागवत पारायण

यहाँ के महिलाओं के श्री स्वामिनारायण मंदिर को १०८ वर्ष पूर्ण होने के साथ जीर्ण भी हो गया था। इस लिये महिलाओं ने प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से नूतन मंदिर निर्माण का संकल्प किया। जिस के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २१-१०-०९ से २५-१०-०९ तक स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग पर बहनों को दर्शन तथा आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय सम्पूर्ण गाँव के भक्तजन भव्य स्वागत किये । प.पू. महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर तथा पूर्णाहुति की आरती उताकर सभा में पधारे थे। सभा में पू. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, पूज्य पी.पी. स्वामी ने सुंदर अमृतवाणी का लाभ दिया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद में बताया कि जगत के जीवों में तथा भगत के जीवो में यही फर्क है कि दीपावली के पवित्र पर्व में आप लोग कथा सुने यह सुंदर काम किया। यही अंत में भी करना है। मंदिर पहले वनजाय इसके लिये आशीर्वाद दिया। - घनश्यामभाई एस. पटेल

विदेश सत्संग समाचार

सानजोसे I.S.S.O. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से काली चौदश को श्री दिलीपभाई त्रिवेदी के घर में सत्संग सभा हुई थी। धोलका के मुनि स्वामीने कथा का लाभ दिया था। मुनि स्वामी ने काली चौदश का माहात्म्य समझाया था। सभी साथ में मिलकर हनुमान चालीसा का पाठ करके श्री हनुमानजी की आरती किये थे। दीपावली तथा नूतन वर्ष के निमित्त १८ अक्टूबर को फ्री माउन्ट हिन्दु मंदिर में दोहर ३-३० बजे सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में कथा, कीर्तन, धून की गयी थी। मुनि स्वामीने श्रीहरि की अद्‌भुत लीला का वर्णन किया था। दीपावली के पवित्र पर्व का माहात्म्य समझाया था। इस प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण भगवान के सिंहासन में सुन्दर रोशनी करके नाना विधभोजन सामग्री प्रभु को अर्पण की गयी थी। यह सत्संग सभा श्री उर्जीत त्रिवेदी तथा पवन सोनी की तरफ से हुई थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।

- प्रशांत धोलकिया

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संत हरिभक्तों के साथ सहकार से दीपोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

धनतेरस को हिसाब रजिस्टर का पूजन। दीपावली के दिन ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया गया था। इस प्रसंग पर पू. निर्गुणदास स्वामीजी, मुनि स्वामी तथा कोलोनिया मंदिर के महंत स्वामी ज्ञानजीवन स्वामीने हरिभक्तों को उपदेशात्मक कथा का लाभ दिया था। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर कथा का लाभ लिये थे। कोलोनिया मंदिर में मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। श्री हनुमानजी के समक्ष शनिवार को ९ बजे मुख्य यजमान तथा सह यजमान द्वारा पूजन अर्चन किया गया था। सतत ४ घंटे तक विधिचली थी। हरिभक्त दर्शन करके धन्य हो गये। - प्रवीणभाई शाह

विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर

न्युजर्सी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शनिवार को विकेन्द्र में सायंकाल दीपावली के प्रसंग पर श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन तथा हिसाबी रजिस्टर की पूजा की गयी थी। इस प्रसंग पर महंत स्वामी माधवप्रसादजीने श्री हनुमानजी के महिमा समझाया था। इसके साथ शारदा पूजन भी किया गया था। हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे।

प्रवीणभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से एवं यहाँ के महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ बर सभी उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। विजया दशमी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३७ वाँ प्राग्टयोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। यहाँ के I.S.S.O. को आजके दिन स्थापना होने से यह उत्सव विशेष रुप से मनाया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन किया गया था। इसके साथ ही पू. आचार्य महाराजश्री से आशीर्वाद की प्रार्थना की गयी थी।

शरद पूर्णिमा को रास का आयोजन किया गया था। सभी को दूध-चिउड़ा का प्रसाद दिया गया था। दीपोत्सव प्रसंग पर रविवार को अन्नकूट का भोग लगाकर आरती की गयी थी। नूतन वर्ष के प्रथम दिन प्रातः ६-०० बजे ठाकुरजी का हजारों भक्त दर्शन करके आनंदित हुये थे। इस तरह अपने मंदिर में प्रत्येक उत्सव पर भक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते हैं। - रमेशभाई पटेल

क्ट्रोगवील (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से महंत हरिनंदनदासजी तथा सभी युवान हरिभक्तों ने कार्तिक शुक्ल-११ शनिवार को सायंकाल ७ से ११ बजे तक सत्संग सभा चली थी।

ता. १-११-०९ रविवार को कोलंबस से श्री विष्णु भगवान की बारात तुलसी विवाह के निमित्त निकली थी। मंदिर के प्रांगण में धूमधाम से विवाह संपन्न हुआ था।

इसके यजमान श्री मनीष उपाध्याय, आनंद उपाध्याय थे। इस प्रसंग पर धर्मवल्लभ स्वामीने तुलसी विवाह की महिमा समझायी थी। स्ट्रोंगविल मंदिर के प्रमुख श्री प्रकाशभाई तथा अन्य हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे। इस प्रसंग में वरपक्ष के यजमान राकेशभाई तथा मंजुलाबहन कल्याण (कोलंबस) तथा कन्यापक्ष के यजमान मुकेशभाई, यजमीन पटेल (सोलोन) तथा मामेरा के यजमान बलदेवभाई तथा शांता बहन थे। बहनों की रसोई की सेवा प्रेरणारुप थी। यहाँ के प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। I.S.S.O. "सेवा" के डॉ. जिग्नेशभाई शाह, डॉ. वालजीभाई मंजपरा तथा स्वयं सेवकों के सहयोग से फ्लु बेकशीनेशन ७० जितने स्थानिक लोगों को फ्री में दिया गया था। - प्रकाश पटेल - कलिवलेन्ड

वोशिंग्टन डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ९-१० तथा ११ अक्टूबर को कथा का आयोजन महादेवजी के मंदिर ओडोरियम होल में लेन्हममेरी लेन्ड में संप्रदाय के विद्वान कथाकार शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र की कथा प्रातः ९ से १२ तथा सायंकाल ४ से ७ बजे तक चलती थी। साथ में धोलका के मुनि स्वामी भी थे। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर कथा का लाभ लिये थे। कथा के अंत में धुन, कीर्तन, आरती का आयोजन किया गया था। शनिवार को घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव मनाया गया था। २४ अक्टूबर शनिवार को सायंकाल ३-३० से ९-३० तक इल्फरीज मेरीलेन्ड में ग्रेस इपोस्कीयल चर्च के पेरीस हाल में सत्संग सभा आयोजित हुई थी। ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया था। हरिभक्त प्रभु के सामने बैठकर धुन-कीर्तन किये थे। साउथ न्युजर्सी (चेरीहील) मंदिर में शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने तथा कलिवलेन्ड मंदिर से हरिनंदन स्वामीने अन्नकूटोत्सव तथा गोवर्धन लीला की कथा सेलफोन के माध्यम से सुनाई थी। बाद में धुन-कीर्तन-आरती-नित्य-नियम किया गया था। पू. महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलिया)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शास्त्री स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी छोटे) स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से सीडनी मंदिर में सत्संग प्रवृत्ति सुंदर चलती है। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ओकलेन्ड-न्युझीलेन्ड के मंदिर से राम स्वामी, भजनानंद स्वामी, तथा श्री कांतिभाई पटेल तथा श्री जयंतिभाई पटेल एवं संत हरिभक्त ता. ४-९-०९ से ७-९-०९ तक सीडनी मंदिर में सत्संग प्रचार के लिये आये थे। शनिवार तथा रविवार को संतो ने रसपान कराकर श्रीजी महाराज का तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा बताई थी। बाद में धुन-कीर्तन का भी आयोजन किया गया था।

ता. २०-९-०९ रविवार को शा.स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी तथा युवान कथाकार शा.स्वा. रामकृष्णदासजीकी उपस्थिति में क्रुज सत्संग का आयोजन किया गया था। १२५ जितने हरिभक्त समुद्र के पानी के बीच में क्रुज में भजन-कीर्तन का लाभ लिये थे। दोनो संतो ने भगवान के लीला चरित्र तथा कीर्तन भक्ति कराकर भक्तोंको प्रसन्न किया था।

ता. ४-१०-०९ शरद पूर्णिमा के दिन नंद-संतो द्वारा रचित गीत के साथ रास का आयोजन किया गया था। यह सभा श्री प्रकाश पटेल की तरफ से हुई थी। सभी को दूध-चिउड़ा का प्रसाद दिया गया था। ता. १८-१०-०९ के दिन अपने मंदिर में ठाकुरजी समक्ष भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। सत्संगी बहनों ने अन्नकूट का प्रसाद तैयार किया था। हरिभक्त अन्नकूट का दर्शन करके भाव विभोर हो गये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।- तेजस पटेल

बैंककोक (थाईलेन्ड) में सत्संग विचरण (४ से ९ नवम्बर)

भारतय संस्कृति से संपन्न थाईलेन्ड देश का बेंगकोक शहर डायमंड तथा कलर स्टोन के व्यापार के लिये विश्वप्रसिद्ध है। यहाँ पर गुजराती सत्संगी दो-तीन पीढी से व्यवसाय के लिये बसे हुये हैं। करीब दश वर्ष पूर्व लालजी महाराज के स्वरुप में प.पू. वर्तमान पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री दो-चार वार विचरण करके सत्संग का रस जगाये थे। उसी की याद करके वहाँ के हरिभक्त करीब तीन

वर्ष से प.पू. आचार्य महाराजश्री को आमंत्रण भेजते थे। उस आमंत्रण का मान रखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में पू. पी.पी. स्वामी हरिओं स्वामी, वी.पी. स्वामी पार्षद वनराज भगत ता. ४-११-०९ के दिन बेंगकोक पधारे। एरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया गया था। श्री रजनीभाई पटेल के घर में निवासीय व्यवस्था की गयी थी। डायमंड के व्यापारी हरिभक्त निरन्तर दर्शन करने आते रहे। इसके साथ ही सभी अपने व्यवसाय स्थल पर तथा घरों में पदार्पण कराते रहे। पू. महाराजश्री बड़े मीठे ढंग से सत्संग के माध्मय से लोगों में सदाचारका सिंचन करते रहे और भक्तजन का अनुभव कर रहे थे।

ता. ७-११-०९ के दिन इन्डो थाईलेन्ड सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। तीनसौ से भी अधिक भावुक भक्त सत्संग का लाभ लिये थे। स्वामिनारायण भगवान के सातवें वंशज के दर्शनार्थ बड़े-बड़े महानुभाव उपस्थित थे। पी.पी. स्वामी तथा हरिओंस्वामीने कथा का लाभ दिया था। ढाई घंटे की कथा में इतनी तन्मयता से लोग कथा सुने कि कोई उठकर नहीं गया।

ता. ८-११-०९ की सुबह ९-३० बजे देव मंदिर में सत्संग का आयोजन किया गया था। इस कथा का लाभ भारतीय हरिभक्तों ने लिया था। ता. ५-६-०९ को घर-घर सभा का आयोजन किया गया था। निकट के हरिभक्त दर्शन-आशीर्वाद का लाभ लिये थे।

ता. ९-११-०९ की रात्रि में श्री प्रागजीभाई भीकडिया के घर निवास करके सभी सत्संग का लाभ लिये थे। इस समय के सत्संग विचरण यात्रा की स्मृति में प्रत्येक रविवार को सत्संग-भजन करने के लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आज्ञा की थी। जिसे सभी हरिभक्त स्वीकार किये थे। श्री प्रागजीभाई भीकड़िया प.पू. आचार्य महाराजश्री को एरपोर्ट तक ही नहीं छोड़ा बल्कि मुंबई तक छोड़ने भी आये थे।

– रजनीभाई पटेल बैंककोक

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

बालवा : श्री प्रहलादभाई चौधरी के पिताजी श्री सोमाभाई जेसंगभाई चौधरी ता. १७-१०-०९ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है।

बालासिनोर : का. पटेल शारदाबहन मणीलाल (उ. ९० वर्ष) ता. २४-१०-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

उनावा : प.भ. शांताबा ता. ८-९-०९ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अहमदाबाद : श्री मूलचंदभाई डाह्याभाई सोनी (पाटडिया: (उम्र ९२ वर्ष) ता. ३-११-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अंगोली : श्री घनश्याम छोटालाल पटेल (श्री धर्मेशभाई के बड़े भाई) ता. ६-११-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

नवावाडज : प.भ. संतोकबा छगनभाई पटेल (उ. ९९ वर्ष) (कोठारीजी की धर्म पत्नी) ता. २९-८-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुयी अक्षरनिवासिनी हुई है।

नवावाडज : यहाँ मंदिर के ट्रस्टी श्री वालजीभाई पोरिया के पिताजी श्री कानजीभाई पोरिया (धूलकोटवाला) ता. २१-१०-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

कटोसणा : (कृष्णनगर) प.भ. ईशाबहन गोविंददास पटेल (उ. १०५ वर्ष) ता. ७-११-०९ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

Editor, Printer and Publisher : Mahant Shastri Swami Harikrishnadasji for Shree Swaminarayan Temple Kalupur, Ahmedabad. Printed at Shree Swaminarayan Printing press, Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad Pin-380 001 and Published at and for Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad (GUJARAT) Pin-380 001.



करिया बलवंतराय हॉल में पारायण के अवसर पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री



हिंमतनगर मंदिरमें पाटोत्सव के अवसर पर प.पू.महाराजश्री का पूजन अर्चन करते सोनी यजमान परिवार



वडु शोभायात्रा में दर्शन देते हुए पू. महाराजश्री के साथ महन्त स्वामी, शा. नारायणवल्लभदासजी और संत



वडु मंदिर में तेजस्वी बालको को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री



जुना रावडीया (पंचमहाल) मंदिर का खात पूजन करते प.पू. महाराजश्री



खारोल (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए पू.महाराजश्री साथ में महंत स्वामी तथा संत



श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण का निरीक्षण करते प.पू. बड़े महाराजश्री साथ में निरमा कंपनी के शेठश्री करसनभाई पटेल



श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निरीक्षण करने के पश्चात् बैठक में प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ गुजरात के सुप्रसिद्ध हास्य कलाकार श्री टीकु तलसाणीया

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



बेंककोक में सभा में आर्शीवाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री



बेंककोक में हरिभक्तो के साथ दर्शन देते हुए
प.पू. आचार्य महाराजश्री





टोरेन्टो (केनेडा) के अपने मंदिर में अन्नकूट दर्शन और तुलसी विवाह



लेस्टर (यु.के.) मंदिर में तुलसी विवाह



शिकागो मंदिर में तुलसी विवाह